विश्व-प्रसिद्धकला सिवस—२

शरद जोशी

नालंदा प्रकाशन
३३।१ भूलभुलैया रोड महरौली नई दिल्ली ११००३०।

आग तपा सोना

निकोलाई ऑस्त्रोव्स्की
रूपान्तरकार
प्रवतार सिंह जसवाल

विश्व प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार
निकोलाइ आस्त्रावस्की की अमर रचना
हाऊ दी स्टील वाज टम्पड
का सरल सक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर

आग तपा सोना

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की

रूपान्तरकार

अवतार सिंह जसवाल

नालदा प्रकाशन, नई दिल्ली-३०

शरद जोशी

मूल्य 15 00 रु

- प्राग तथा माना (उपन्यास) निकोलाई ऑस्त्रोवस्की
- पुनर्मुद्रण 1987
- नालन्दा प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
- मुद्रक [illegible] दिल्ली-9[illegible]

/

तुम सब खडे हो जाओ जो ईस्टर की छुट्टियो स पहले मेर घरपर परीक्षा देने आए थे।'

यह आदेश देने वाला पादरी की पोशाक पहने एक मोटा बेडौल व्यक्ति था। आदेश का पालन हुआ। सब बच्चे, जिनमे दो लडकिया और चार लडके थे, खड हो गए। तब उसकी छोटी छोटी दो आखें छ बच्चो को ऐस घूरने लगी माना उह आर पार छेद देंगी। कुछ क्षणोपरात उसने लडकियो को बैठ जान का इशारा किया। लडकियो ने छुटकारे की सास ली। अब फादर वासिली की दहकती हुई नजरें उन चार लडको पर केन्द्रित हुइ जो एक दूसर स बिलकुल सटे हुए खडे थे।

'बोलो कौन बदमाश तम्बाकू पीता है तुम लोगा मे ?'

'हम नही पीते फादर। चारो न एकसाथ डरते-डरते उत्तर दिया।

यह सुनकर पादरी का चेहरा लाल भभूका हो गया।

'हू, तो तुमलोग तम्बाकू नही पीते, क्यो ? बदमाश कही के। तो फिर मेरे आटे म तम्बाकू किसने मिलाया था? बोलो। जरा ठहरो अभी मालूम हो जायगा कि पीते हो या नही। अपनी-अपनी जेबें उलटो। एक दम। देरी मत करो जल्दी उलटो।'

चार म स तीन लडको ने जल्दी जल्दी अपनी जेबो का सामान निकाल कर सामने मज पर रखा और जेबें उलट दी। फादर वासिली ने बारीकी स जेबो की सीवना का मुआयना किया किन्तु उह कुछ नही मिला। वह सीवना म तम्बाकू का चूरा तलाश कर रहे थे। अब पादरी साहब चौथे लडके की ओर घूमे। इस लडके की आखें काली थी और वह

बनाया था। पादरी साहब उस धर्मशास्त्र में सदा पूरे नम्बर दिया करते थे। उसने निश्चय किया कि इस बारे में वह पादरी साहब से प्रश्न करेगा अगर उन्हें आज्ञा मिलने पर।

स्कूल दर्जे के मास्टर साहब कहते हैं कि पृथ्वी करोड़ों वर्ष पुरानी है जबकि बाइबिल में लिखा है कि वह पांच हजार ...

पादरी साहब की भारी चीख ने उसकी बात बीच में ही काट दी। यहां नहीं, ऐसा अधार्मिक सवाल करने के लिए पादरी साहब ने उसका कान पकड़कर बार बार उसका सिर दीवार से टकराया था। थोड़ा देर बाद वह कक्षा से बाहर बरामदे में खड़ा था। उसका मासूम बाल हृदय किसी भी अन्याय के खिलाफ, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो विद्रोह करता था। उस मार के लिये जो उस पर बेजा पड़ी थी वह कभी पादरी साहब को माफ नहीं कर सका और उसका मन गुस्से व नफरत से भर उठा था।

कक्षा के लड़कों की एक मर्गो बुजाक को छोड़कर जो पावेल का गहरा दोस्त था और जिसने पावेल को पादरी साहब के बावर्चीखाने में स्टर के केक के आटे में मुट्ठी भर भर की उगाई तम्बाकू छिड़कते देखा था समझ में यह बात नहीं आई कि क्यों पादरी साहब ने पावेल कोर्चागिन को कक्षा से बाहर निकाला?

••

रेलवे रेस्तरां के मालिक ने जो पीला सा अधेड़ आदमी था और जिसकी आंखें बेरंग और बुझी बुझी सी थीं, कनखियों से पावेल को देखा क्या उम्र है इसकी?

'बारह।

ठीक है। रह सकता है। हर महीने में आठ रूबल मिलेंगे। और खाना भी जिस दिन काम करेगा। एक दिन छोड़कर हर दूसरे दिन चौबीस घंटे काम करना पड़ेगा। लेकिन हां एक बात अच्छी तरह समझ लो, चोरी चकारी नहीं चलेगी।'

अरे नहीं साहब कैसी बात कहते हैं! यह चोरी नहीं करेगा। मैं इसका जिम्मा लेती हूं।' मां ने डर कर फौरन आश्वस्त करने के लिए कहा।

'तो फिर आज से ही काम शुरू कर दे', मालिक ने आदेश दिया और काउंटर के पीछे खड़ी औरत की ओर मुड़ते हुए कहा—"ज़ीना इस लड़के को बावर्चीखाने में ले जाओ और फ़ोसिया से कहो, ग्रिश्का की जगह इसको काम पर लगा दे।"

उदास आँखों से माँ ने उसे जाते हुए देखा और फिर वापस चली गई। भीतर काम जोरों से चल रहा था। रकाबियों, काँटों, छुरियों का ढेर मेज पर लगा हुआ था और बहुत सी औरतें अपने कंधों पर पड़े तौलियों से उन्हें पोंछ रही थीं। एक लड़का जिसके सिर पर बड़े-बड़े लाल लाल बालों का गुच्छा था जो पावेल से थोड़ा बड़ा था, दो बड़े समोवारों[1] को ठीक कर रहा था।

वह जगह कड़ाह में उबलते हुए पानी की भाप से भरी हुई थी। उसी पानी में रकाबियाँ धुल रही थीं। भाप के कारण पावेल उन औरतों के चेहरों को न देख सका। वह अनिश्चय की हालत में खड़ा रहा कि कोई उसे बताए कि क्या करना है।

शराबख़ाने की नौकरानी ज़ीना ने एक रकाबी धोने वाली के पास जाकर उसका कंधा छुआ और बोली—

"देखो फ़ोसिया, मैं तुम्हारे लिए ग्रिश्का की जगह एक नया लड़का ले आई हूँ। तुम इसको काम बतला दो।"

फ़ोसिया ने माथे का पसीना पोंछते हुए बड़े गौर से पावेल को सिर से पाँव तक देखा जैसे उसे परख रही हो। फिर गहरी और बड़ी प्यारी आवाज़ में बोली—"अच्छा, कुछ बहुत काम नहीं है भैया! मगर करना होगा खूब। यह ताव की जो चीज़ यहाँ देखते हो न, सवेरे से ही उसको गरम करना पड़ता है और हमेशा गरम रखना पड़ता है ताकि खौलता हुआ पानी हमेशा तैयार मिले। फिर लकड़ी चीरनी होती है और जो समोवार हैं उनको भरना पड़ता है। कभी तुम्हें छुरी काँटे भी साफ़ करने पड़ेंगे और — पानी की बाल्टियाँ भी बाहर ले जानी पड़ेंगी। काम की यहाँ कोई कमी नहीं है भाई!"

---

१ एक खास तरह का चूल्हा जिसके ऊपर पानी का भी बर्तन होता है।

उसका बोलने का ढंग, तमतमाया हुआ चेहरा और उस पर छोटी सी उठी हुई नाक, यह सब पावेल को बहुत अच्छे लगे।

"काफी भली मालूम होती है" उसने सोचा। फिर पूछा "अब मुझे क्या करना है?"

"यह लो" कहते हुए उसने पावेल को रकाबी पोछने का तौलिया दिया, 'इसका एक सिरा अपने दांत मे पकडो और दूसरा सिरा हाथ से पकड कर कसकर तानो। यह देखो कांटा है। इसके दातो के बीच बीच तौलिये को अन्दर-बाहर करो और देखो जरा भी मैल न रहने पाये। इन चीजो के बारे मे यहा बहुत सख्ती बरती जाती है। ग्राहक हमेशा कांटो को बड़े गौर से देखते है और अगर जरा सा भी मैल मिल जाता है तो बड़ा वावेला मचाते हैं जिससे खड़े खड़े तुम निकाल बाहर कर दिये जाओगे।'

इस तरह पावेल की मजदूरी की जिन्दगी शुरू हुई।

●●

लकडी चीरने के कारखाने की छिटपुट फैली इमारतो पर सुबह का सूरज चढने लगा था। थोडा ही देर मे पावेल का छोटा सा मकान लेशचिन्स्की के बगीचे के पीछे दिखाई देने लगेगा।

उसकी मा ने जो आगन मे समोवार सुलगा रही थी अपने बेटे को आते हुए देखा तो कुछ चिंता के स्वर मे बोली, "कहो कैसा रहा?"

"बहुत अच्छा," पावेल ने जवाब दिया। मा कुछ कहने ही वाली थी कि खुली हुई खिडकी मे पावेल का अपने भाई आर्तेम की चौडी पीठ दिखाई दी।

"अच्छा तो आर्तेम आ गया?" उसने उद्विग्नता से पूछा।

"हा कल आया था। अब वह यही रहेगा और रेलवे यार्ड मे काम करेगा'। कुछ झिझकते हुए उसने दरवाजा खोला।

उस आदमी ने जो मेज के सामने दरवाजे की ओर पीठ किये बैठा था कमरे मे दाखिल हुए पावेल की ओर अपनी विशाल कमर को मोडा, घनी काली भवो के नीचे उसकी आखो मे कठोरता का भाव था।

का बदबू स पीछा छुडाने के लिए उसका नन्हा दिल ग्रकुला उठा। ग्रौर फिर ग्राखिरकार एक दिन उसे उनस छुटकारा मिल ही गया।

●●

उस छोटे स कस्बे म एक तूफान की तरह यह खबर फैल गई कि जार का तख्ता उलट दिया!

कस्बे वालो ने इस खबर को मानने स इन्कार कर दिया।

उन्होने इस खबर को तब माना जब एक गाडी तूफान म रेंगती हुई-सी स्टेशन म दाखिल हुई ग्रौर उसम स फौजी बरान कोट पहने ग्रौर कधो पर राइफिल लटकाए दो विद्यार्थी और लाल लाल फीते बाहो म बाधे हुए क्रातिकारी सैनिको का एक दस्ता प्लेटफार्म पर उतरा और स्टेशन के पौज। सिपाहियो, एक वृद्ध कर्नल और गैरिसन के प्रधान को गिरफ्तार कर लिया। बर्फ से ढकी सडको पर चलते हुए हजारो ग्रादमी कस्बे के चौक म ग्रा पहुचे।

ग्राजादी बराबरी और भाईचारा—ये शब्द जो उन्होने पहले कभी नही सुने थे ग्रब सुने और उन्हे प्यासो की तरह पी गए।

उसके बाद तूफानी दिन ग्राए, हलचल ग्रौर खुशी स भरे। फिर एक ठहराव सा ग्रा गया और उस टाउन हाल पर लहराता हुग्रा लाल झडा ही होने वाले परिवर्तन की अकेली निशानी रह गया। उसी टाउन हाल म मजिस्ट्रेट ग्रौर बुर्जुग्रा के मानने वालो ने ग्रपनी किलेबन्दी की थी। उस पर फहराते हुए लाल झडे के ग्रलावा सब-कुछ ज्यो का त्यो रहा।

जनता बिलस्की और सर्गेई ब्रुजाक के लिए कुछ भी नही बदला था। मालिक लोग ग्रब भी बदस्तूर कायम थे। नवम्बर के महीने म पहुचकर ही कुछ ग्रसाधारण बाते शुरू हुई। स्टेशनो पर एक नई तरह के लोग नजर ग्राने लगे जिन्होने व्यवस्था म कुछ हलचल पैदा करनी शुरू की। उनमे से ज्यादातर लोग मोर्चे पर से लौटे हुए सैनिक थे ग्रौर उन्ही की सख्या बराबर बढती जा रही थी। उनका नाम कुछ ग्रजीब-सा था— बोल्शेविक।

किसी को मालूम न था कि यह तगडा ग्रौर वजनदार लफ्ज कहा

तब तक पावेल एक मग्गे म पानी ले ग्राया था जिसे पीकर घुडसवार ने लगाम को झटका दिया ग्रौर तेजी स चीड के जगलो की ग्रार निकल गया।

'वह कौन था ?' पावेल न क्लिम से पूछा।

कधे उचकाते हुए क्लिम बाला— 'मुझे क्या मालूम।

लगता है फिर सरकार मे रद्दाबदल होगी। इसलिए नेशचिन्स्की परिवार कल ही यहा से चला गया। ग्रगर ग्रमीर लोग भाग रहे है, तो इसका ग्रथ होता है कि छापेमार ग्रा रहे है। सर्गेई ने एलान किया, ग्रौर दृढता के साथ इस राजनीतिक सवाल का यू हल कर दिया जैसे उसमे ग्रौर कुछ कहना बाकी न हो।

इस बात म तर्क इतना प्रबल था कि पावल ग्रौर क्लिम को झट विश्वास हो गया ग्रौर उन्होन फौरन सर्गेई की बात मान ली।

ग्रभी इन लडको की बहस खतम भी नही हुई थी कि तभी बडी सडक से ग्राती हुई घोडो की टापो की ग्रावाज सुनकर वे तीनो दौडकर फिर बाडी के पास ग्रा गए।

उधर जगल के हाकिम के बगले के पास जो पेडो की झुरमुट म इस तरह छिपा हुग्रा था कि मुश्किल से नजर ग्रा रहा था उन्होन जगल मे ग्रादमियो ग्रौर गाडियो को निकलते देखा ग्रौर बडी सडक पर उन्होन लगभग पन्द्रह घुडसवारो के दल को देखा जिनके घोडो की काठी पर राइफिलें लटक रही थी। घुडसवारो के ग्राग ग्रागे एक ग्रधेड ग्रादमी ग्रपने घोडे पर सवार चला ग्रा रहा था। वह खाकी फौजी कोट पहन ग्रौर ग्रफसरो का कमरबन्द लगाये हुए था। दूरबीन उसके गले म लटक रही थी। उस ग्रादमी के ठीक पीछे वह था जिससे ग्रभी ग्रभी लडको की बात हुई थी। उस ग्रधेड ग्रादमी के सीने पर एक लाल फीता टका हुग्रा था।

सर्गेई न पावेल की पसली म उगली गडाते हुए कहा 'मैंने क्या कहा था तुमसे ! उस लाल फीते को देखते हो ? ये लोग छापेमार है [illegible] बदला । ग्रौर खुशी म नाचते हुए वह कूदकर बाडी के पास सडक पर ग्रा खडा हुग्रा। दूसरो ने भी ऐसा ही किया ग्रौर तीनो सडक के किनारे ग्रा गए तथा गौर से ग्रपने पास ग्राते लोगो को [illegible] देखते

वा यह है कि वह प्रिंटर और मशीनिस्ट है और उनको स्टेशन पर काम मिल सकता है। और किसी ने किर्योन्गेर को हमारी टुकड़ी के साथ देना भी रहा है। आज रात को वे यहां आयेंगे। वह काफी समझदार आदमी है और काम को अच्छी तरह चला सकेंगे। मैं समझता हूं इस काम के लिए वही उत्तम साबित आदमी है।

इस पर सभी सहमत थे। तय हुआ कि वे गुजराई के लिए कुछ पैसा और जरूरत के लिए कुछ परिचय पत्र छोड़ जायेंगे। तब तीसरा और आखिरी सवाल उठा कि शहर में जार के खिलाफ लड़ाई के वक्त छूट गए तीस हजार राइफिलों का क्या किया जाय जिन्हें सब लोग भूल चुके हैं और जो एक किसान के यहां सुरक्षित रखी हैं? इस पर सभी का यह मत था कि उन्हें जर्मनों के लिए नहीं छोड़ना चाहिए और जनता में बांट देना चाहिए। इस प्रकार सब कुछ तय हो जाने के बाद सभी, सुबह कूच करने से पहले कुछ आराम करने चले गए।

●●

दूसरे रोज पावेल बिजलीघर से अपने घर लौट रहा था। वहां वह पिछले साल से फायरमैन के मददगार के रूप में काम कर रहा था। उसे फौरन पता चल गया कि आज शहर में असाधारण खलबली मची है। जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया उसे लोग मिलते गए जो एक दो और कोई कोई तो तीन तीन राइफिलें लिए चले आ रहे थे। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है। वह तेजी से अपने घर की ओर लपका।

लेश्चिन्स्की के बगीचे के सामने उसे कल के अपने परिचित लोग मिले। वे अपने घोड़ों पर सवार हो रहे थे।

घर जाकर जल्दी जल्दी हाथ मुंह धोकर और मां से यह पता कर कि बड़ा भाई आर्तेम अभी तक घर नहीं लौटा पावेल तेजी से सर्गेई ब्रुजाक के घर की ओर चल पड़ा। सर्गेई का पिता इंजन ड्राइवर का सहायक था और उसका अपना एक छोटा-सा मकान और थोड़ी सी जमीन थी। सर्गेई घर पर नहीं था और उसकी मां ने जो मोटी सी पीले चेहरे वाली स्त्री थी पावेल को अरुचि की निगाहों से देखा।

"पता नहीं वह कहां है! सबेरे सबेरे जो पहली चीज उसने की वह

(१) मैं हुक्म जारी करता हू कि

शहर के सारे लोग चौबीस घटे के अन्दर अन्दर सारी बदूकें और खतरनाक हथियार जो उनके पास हो जमा कर दें। जो इस हुक्म को नही मानगा उसे गोली मार दी जायेगी।

(२) शहर मे मार्शल ला जारी किया जाता है और लोगो को मनाही की जाती है कि आठ बजे के बाद सडको पर न निकलें।

—मेजर काफ शहर कमाडैण्ट।

कमाडण्ट के हुक्म के बारे म सुनते ही आर्तेम बडी तेजी से घर की ओर चला। बाहर हाते मे ही पावेल मिल गया। उसने धीरे स किंतु सख्त आवाज म पावेल से पूछा— तुम भी कोई हथियार घर लाये थे?'

पावल का इरादा राइफिल के बारे मे किसी को कुछ बतलाने का नही था। मगर अपने भाई से ही कैसे झूठ बोलता! उसने साफ-साफ सब बात बतला दी।

दोनो साथ-साथ शेड मे गए। आर्तेम ने बल्ली पर से, जहा वह छिपा कर रखी गई थी राइफिल को उतारा उसके बोल्ट और सगीन को अलग किया और उसकी नली पकडकर अपनी पूरी ताकत से लकडी के एक खम्बे पर उसे दे मारा। उसका कुदा चूर-चूर हो गया। और फिर उस राइफल का अवशेष बगीचे के उस पार, दूर कूए मे फेंक दिया। सगीन और बोल्ट को आर्तेम ने सडास मे डाल दिया।

हाता पार करके जब दोनो भाई घर के अन्दर जा रहे थे तब एक गाडी लेशचिस्की के फाटक पर रुकी और उसमे से वह वकील उसकी बीबी और दो बच्चे—नेली और विक्टर बाहर निकले।

आर्तेम उनको देखकर बडबडाया 'अच्छा तो यह नाजुक चिडिया अपने घोसले पर वापस आ गइ! अब असल तमाशा शुरू होगा। खुदा गारत करे इन हरामजादो को!' कहते हुए वह अन्दर चला गया।

सारा दिन पावेल उस राइफिल के बारे मे सोच सोचकर दुखी होता रहा। इसी बीच उसका दोस्त सर्गेई एक पुरानी शेड म दीवाल के पास, जमीन मे गड्ढा खोदने मे जी जान से लगा हुआ था। आखिर गड्ढा तैयार हो गया। उसके अन्दर सर्गेई ने तीन चमचमाती हुई नई राइफिलो

जाऊ और बडे साहब से बातें कर लू ।'

यह भी कोई पूछने की बात ह ? जरूरत तो उन्हे होगी ही। आज बिजली घर सिर्फ इसलिए बन्द रहा कि स्टेकोविच बीमार है। बडे साहब दो बार आए थे—उन्हे बडी तलाश थी ऐसे आदमी की जो उसकी जगह ले सके। पावल बोला।

'अच्छा तो बात तय हो गई। मैं कल तुम्हारे पास आऊगा और फिर हम लोग साथ चलेंगे।

'अच्छा।

आर्तेम ने दरवाजे तक उनको पहुचाते हुए कहा 'अच्छा जुखराई सलाम खुदा तुम्हे कामयाब करे। कल तुम मेरे भाई के साथ जाना और वहा उस नौकरी को ठीक कर लेना।

●●

उस टुकडी के जाने के तीन दिन बाद जर्मन शहर मे दाखिल हुए। उनके आने की घोषणा काफी दिनो से उजाड स्टेशन के इजन की सीटी ने की।

कस्बे भर मे खबर फैल गई कि जर्मन आ रहे है।

कस्बेवाले अपने बगीचो की झाडियो और छोटे छोटे लकडी के फाटको की हिफाजत मे लगे हुए थे। उन्हे शहर सडक पर निकलने मे डर लगता था।

बडी सडक के दोनो ओर एक एक की कतार मे मार्च करते हुए जर्मन आए। वे हल्के जैतूनी रग की वर्दी पहने हुए थे और अपनी राइफिलें साधे चल रहे थे। आगे आगे माउजर[1] हाथ मे लिए दो अफसर चल रहे थे। सडक के बीचो बीच दुभाषिया चल रहा था।

शहर के बीच चौक मे जर्मन कतार मे धककर खडे हो गए। नगाडे बज रहे थे। कस्बे के कुछ अधिक साहसी लोगो की एक छोटी सी भीड इकट्ठी हो गई। उक्रेनी कोट पहने हुए ह[illegible] मन का वह दुभाषिया आदमी दवाइयो की दुकान के सायबान पर च[illegible] गया और वहा से उसने कमाडैण्ट मेजर कार्फ का जारी किया हुआ हुक्मनामा जोर से पढना शुरू किया

---

१ एक तरह का पिस्तौल।

(१) मैं हुक्म जारी करता हू कि

शहर के सारे लोग चौबीस घटे के अन्दर अन्दर सारी बदूकें और खतरनाक हथियार जो उनके पास हो, जमा कर दें। जो इस हुक्म का नही मानेगा उसे गोली मार दी जायेगी।

(२) शहर मे मार्शल लॉ जारी किया जाता है और लोगो का मनाही की जाती है कि आठ बजे के बाद सडको पर न निकलें।

—मेजर काफ शहर कमाडैण्ट।

कमाडैण्ट के हुक्म के बारे मे सुनते ही आर्तेम बडी तेजी से घर की ओर चला। बाहर हाते मे ही पावेल मिल गया। उसने धीरे से किंतु सख्त आवाज मे, पावेल से पूछा— तुम भी कोई हथियार घर लाए थे ?'

पावेल का इरादा राइफिल के बारे मे किसी को कुछ बतलाने का नही था। मगर अपने भाई से ही कैसे भूठ बोलता ! उसने साफ-साफ सब बात बतला दी।

दोनो साथ साथ शेड मे गए। आर्तेम ने बल्ली पर से जहा वह छिपा कर रखी गई थी, राइफिल को उतारा, उसके बोल्ट और सगीन को अलग किया और उसकी नली पकडकर अपनी पूरी ताकत से लकडी के एक खम्बे पर उसे दे मारा। उसका कुदा चूर चूर हो गया। और फिर उस राइफल का अवशेष बगीचे के उस पार दूर कूड़ मे फेंक दिया। सगीन और बोल्ट को आर्तेम ने सडास मे डाल दिया।

हाता पार करके जब दोनो भाई घर के अन्दर जा रहे थे तब एक गाडी लगचिस्की के फाटक पर रुकी और उसमे से वह वकील, उसकी बीबी और दो बच्चे—नली और विक्टर बाहर निकले।

आर्तेम उनको देखकर बडबडाया 'अच्छा तो यह नाजुक चिडिया अपने घोसले पर वापस आ गई ! अब असल तमाशा शुरू होगा। खुदा गारत करे इन हरामजादो को ! कहते हुए वह अन्दर चला गया।

सारा दिन पावेल उस राइफिल के बारे मे सोच सोचकर दुखी होता रहा। इसी बीच उसका दोस्त सर्गेइ, एक पुरानी गड मे दीवाल के पास, जमीन मे गडढा खोदने मे जी जान से लगा हुआ था। आखिर गडढा तयार हो गया। उसके अन्दर सर्गेई ने तीन चमचमाती हुई नई राइफिलो

रास्ते अन्दर घुसकर उसने मेज से रिवाल्वर केस उठाया, उसमें से नीले नीले लोहे का वह हथियार निकाला और खिड़की से नीचे कूद गया। चारों तरफ सन्नाटा देख उसने पिस्तौल सावधानी से अपनी जेब में डाली और तेजी से भागकर बगीचे को पार करता हुआ चेरी पेड़ पर बन्दर की सी फुर्ती से चढ़ता हुआ अपनी छत पर जा पहुंचा।

कुछ देर बाद वह घर से कुछ दूर जंगल वाली सड़क पर, एक ईंट के भट्टे के वीरान खण्डहर में चीथड़ों से अच्छी तरह लपेट कर रिवाल्वर को भट्टे के फर्श के कोने में रखकर उसे पुरानी ईंटों के ढेर से ढक रहा था। बाहर आकर उसने पुरानी भट्टी के दरवाजे को ईंटों से चिन दिया और जगह की ठीक स्थिति दिमाग में बैठाकर पावेल घर की ओर चल दिया। उस समय भावावेश के कारण उसे अपने घुटने कांपते महसूस हुए।

अपने घर न जाकर वह रोज से जल्दी ही बिजली घर की ओर चल दिया। बिजली घर में ही उसे जुखराई से पता चला कि उसके घर की तलाशी ली गई थी। किन्तु मिला कुछ न था। जुखराई ने पावेल से तलाशी का कारण जानना चाहा, किंतु वह चुप रहा। रिवाल्वर की चोरी की इस घटना से पावेल को इस बात का विश्वास हो गया कि कभी कभी ऐसी खतरनाक कोशिशें भी कामयाब हो जाती हैं।

●●

पुरानी पत्थर की खान वाली तलैया पर दोपहर में पावेल मछली पकड़ने के लिए वंसी को पानी में डाल बैठा था। अपने काम में वह इतना मग्न था कि उसे मालूम ही नहीं हुआ कि मरलाहों जैसा एक सफेद बलाउज पहने जिसका कालर धारीदार नीला था और एक हल्का भूरे रंग का स्कर्ट पहने एक लड़की उसके पीछे पहुंच चुकी है। पावेल का ध्यान तब भंग हुआ जब वह बोली " तुम समझते हो कि यहां मछली पकड़ सकते हो ?" पावेल ने पीछे मुड़कर गुस्से में देखा।

वंसी को पकड़े हुए हाथ हल्के से कांप गए। वंसी भी कांप गई और शांत पानी की सतह पर गोल गोल दायरे फैल गए।

"देखो देखो मछली ने चारा चुगा।" पावेल के पीछे से लड़की ने आवेग में कहा। अब वह अपने मन का संतुलन बिलकुल खो बैठा और

इतने जोर से उसने वसी खींची कि चारा लगा काटा पानी मे से उछलकर वाहर आ पड़ा।

"जहन्नुम म जाय, कोई उम्मीद नही है मछली पान की। यह लडकी यहा क्या करने आई है," पावेल न खीझ के साथ सोचा और अपन फूहड पन को ढकने के लिए उसन वसी के काटे को आर भी दूर फेंका। मगर वह गिरा वहा, जहा उसे न गिरना चाहिए था यानि मेवार की घनी दो झाडिया के बीच, जहा वसी का फस जाना लाजमी था।

उसकी समझ मे आ गया कि क्या बात हो गई है।

'बहुत अच्छा हो, देवीजी अगर आप यहा से अपना रास्ता नापें' वह दात पर दात दबाकर बोला। स्पष्ट ही उसन अपनी श दावली के सभ्यतम शब्दो का प्रयोग किया था।

तोनिया की आखें छोटी हो गई और उनम हसी नाचने लगी।

'क्या मैं सचमुच तुम्हारे काम मे बाधा पहुचा रही हू ? चिढाने का स्वर अब मैत्री और समझौते मे बदल गया और पावेल, जो इन 'देवीजी' के सग रुखाई से पेश आने वाला था अब अपने को निहत्था महसूस करने लगा था।

"तुम चाहो ता रहो और देखो। मेरे लिए सब वराबर है उसने अनिच्छापूवक कहा और फिर अपनी वसी मे दत्तचित्त हो गया। वैसे उसकी इच्छा यही थी कि वह चली जाय।

मगर तोनिया गई नही। पानी मे हलके हलके लहराते हुए विलो के तने पर वह आराम से घुटना पर किताव रखकर बैठ गई और इस धूप मे तपे हुए रग के, काली काली आखोवाले उजड्ड से किशोर को देखने लगी जिसन उसका एक तो ऐसा रुखा स्वागत किया था और अब जान-बूझकर उसकी उपेक्षा कर रहा था।

उसी वक्त वहा रेलवे याड के बडे साहब इजिनियर सुखार्को का सत्रह साल का लडका हाथ म एक बडी सी वसी लिए और मुह के एक काने मे सिगरेट दवाए, जनानी शक्ल के विक्टर लेशचिस्की के साथ वहा आया। तोनिया के साथ उसकी पहले से मुलाकात थी। उसने विक्टर का तोनिया से परिचय करवाया। सुखार्को एक आवारा और बदमाश

लडका था।

पावेल को वहा मछली पकडते देख, वह आदेश के स्वर में बोला, 'देखो अपनी बसी वसी समेटो और यहा से चलते बनो।

किंतु पावेल ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह उसको जानता था और झगडा नहीं करना चाहता था क्योंकि उसका भाई आर्तेम रेलवे यार्ड में इंजिनियर सुखार्को के नीचे काम करता था। झगडे के कारण भाई की नौकरी जाने का डर था। किंतु जब बदमाश सुखार्को ने दूसरी बार चिल्लाकर उसे भाग जाने के लिए कहा और साथ ही लात मारकर मछली के चारे वाले टीन के डिब्बे को तालाब में फेंक दिया तब वह उछलकर खडा हो गया।

सुखार्को पावेल से दो साल बडा था।

अच्छा तो तुम यो नही मानोगे ! लो फिर ! कहते हुए उसने हाथ घुमाकर एक जोर का घूसा सुखार्को के मुह पर मारा। इसके बाद उसने उसे सभलने का बिलकुल मौका नहीं दिया। अपने दुश्मन का मुकाबला करते हुए, उसे याद आया अपना सारा वजन बाए पैर पर दो और दाया पैर कडा रखो दायें पैर का घुटना मुडा हो। अपने जिस्म का सारा वजन अपने घूसे में डालो और ठुड्डी के सिरे पर ऐसा घूसा मारो जो बिछलता हुआ ऊपर को निकल जाय।

कटाक ! दातो के आपस में टकराने की आवाज हुई। फिर उस भयानक दर्द से चिल्लाते हुए जो उसकी ठुड्डी और दातो के बीच दब गई जीभ में फैल गये थे सुखार्को हाथ फैलाये लडखडाता हुआ पानी में जा गिरा और ऊपर किनारे पर हसी के मारे तोनिया का बुरा हाल हो गया।

वह ताली बजाती हुई चिल्लाई खूब खूब ! खूब किया हो बहादुर !

पावेल ने अपनी फसी हुई बसी को इतने जोर से खींचा कि वह टूट गई और वह भटके का फाटक पार करते हुए सडक पर आ गया।

जाते जाते उसने विक्टर को तोनिया से कहते सुना 'यही पावेल कोर्चागिन है अव्वल नम्बर का बदमाश।

स्टेशन पर हालत गम्भीर होती जा रही थी। हवा मे खबर गम थी कि रेलवे मजदूर हडताल करने जा रहे है। जमनो ने दो एजिन ड्राईवरो को पकड लिया था जिन पर उन्हे कोई इश्तिहार निकालने का शक था। उन मजदूरो म भी जिनका गाव से सम्बन्ध था, बडी खलबली थी क्योकि वसूली की जा रही थी और जागीरदारो को उनकी जागीर वापस दी जा रही थी।

हटमैन के सतरिया के कोडो मे किसानो की पीठें लहूलुहान हो रही थी। इस इलाके मे छापे मार आन्दोलन तेज होता जा रहा था बोल्शेविको न अब तक लगभग एक दजन छापे मार टुकडिया सगठित कर ली थी।

इन दिनो जुखराई के लिए आराम नहा था। उसने रेलवे याड के मैकेनिको और लकडी काटने वाले मजदूरो म एक बहुत मजबूत दल बना लिया था। अब वह रेलवे याड म ही नौकरी करता था ताकि काम मे आसानी रहे।

एक दिन हेटमैन के सतरिया ने स्टेशन के तारघर के फोनोभारिको को पकड लिया। जब उस बदर्दी मे पीटा गया तो उसन आर्तेम के मित्र और सहयोगी रोमान का नाम बता दिया। रोमान काम कर रहा था जब स्टेशन कमान्डेट के सहायक न जो दो जमन और हटमैन के सतरी के साथ था उसके चेहरे पर अपनी चाबुक स वार किया। चाबुक समूचे चेहरे पर एक लकीर बनाती निकल गई। फिर उसने उस मैकेनिक की बाह पकडकर बडे जोर से मरोडी और बोला चलो हम जरा तुम्हें सिखलायें कैसे प्रचार किया जाता है सूअर का बच्चा! कैसे घूम घूमकर लोगो को भडकाया जाता है।

आर्तेम जो रोमान के पास ही काम कर रहा था अपनी रेती वही छोड सहायक कमाडेंट के पास आया। वह गुस्से स भरा हुआ था। फिर भी गुस्से को सयत रखते हुए बोला अब, ए दोगले के बच्चे! अपनी खैरियत चाहता है तो अब उस पर हाथ न चलाना।

उसी समय सहायक कमाडेंट के साथ आए एक जमन सतरी ने राईफल सीधी कर ली और चीखा

हाल्ट !

आर्तेम विवश हो गया। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। आर्तेम को तो एक घण्टे भर बाद छोड दिया गया किन्तु रोमान को वहीं एक मालगोदाम में बन्द कर दिया गया।

गिरफ्तारी के दस मिनट बाद पूरे रेलवे यार्ड के मजदूरों ने औजार रख दिए और आवेश में भरे स्टेशन के पास में इकट्ठे हो गए। तुरन्त किसी ने रोमान और आर्तेम की रिहाई की मांग का मसविदा तैयार किया। मजदूरों का गुस्सा और बढा जब सहायक कमाण्डेंट सतरिया की एक टुकडी के साथ रिवाल्वर चमकाता हुआ पार्क में आया और चिल्लाया

सब अपने अपने काम पर जाओ वरना हम यहीं एक दो को पकड लेंगे और कुछ को गोली मार देंगे।'

गुस्से से भरे मजदूरों ने एक जबदस्त हुंकार से उसका जवाब दिया जिसे सुनकर वह स्टेशन की ओर भागा। मगर इसी बीच स्टेशन कमाण्डेंट ने शहर से जर्मन सिपाही बुला लिए थे और उनके ट्रक के-ट्रक स्टेशन की सडक पर तेजी से चले आ रहे थे।

मजदूर तितर बितर हो अपने घरों को चल दिए। एक भी आदमी काम पर न रहा। जुखराई का काम अब अपना असर दिखला रहा था। यह पहला मौका था जब स्टेशन के मजदूरों ने कोई सामूहिक कदम उठाया था।

●●

तोनिया झील के चट्टानी किनारे पर घास से ढकी एक नीची जगह पर लेटी हुई थी। अचानक झील के किनारे छपाक की आवाज हुई। तोनिया ने ऊपर देखा। एक चुस्त फुर्तीला धूप से तपे हुए रंग का शरीर जोर-जोर से हाथ मारता हुआ किनारे से दूर तैरता चला जा रहा था। कभी वह उलट जाता था कलैया खाता था गोते लगाता था फिर वह पीठ के बल लेट कर बहने लगा।

इस तरह से देखना ठीक नहीं कहते हुए वह मुस्कराई और फिर साथ लाई किताब पढने लगी। कुछ देर बाद एक लड़का, जो उसी तैरने वाले आदमी से काले पत्थर की चट्टान पर चढते हुए अनजाने में तुरन्त

गया था, आकर तोनिया की किताब पर गिरा। उसने आंख ऊपर उठाई तो पावेल कोचागिन को सामने खड़ा पाया। पावेल भी इस अचानक मुलाकात से अचकचा गया और घबराहट में पलटने के लिए मुड़ा।

तभी तोनिया ने उसे बुला लिया और अपने पास बैठने के लिए कहा। इसके बाद दोनों ने एक-दूसरे का परिचय प्राप्त किया। फिर घंटों जमकर उनकी बातें हुई। पावेल ने अपनी जिन्दगी की सारी कहानी तोनिया को सुना दी। तोनिया जंगल वार्डन तुमानोव की बेटी थी। अब दोनों में दोस्ताना हो गया।

पावेल से अलग होकर तोनिया घर की ओर चली, तो उसका मन काली आंखों वाले नौजवान के संग अपनी मुलाकात में डूबा हुआ था।

"क्या जोश है उसमें! क्या हिम्मत! और जरा भी वैसा बदमाश नहीं जैसा मैंने सोचा था। और चाहे जो हो वह उन गधे सुखार्को विक्टर जैसा नहीं है।"

तोनिया ने सोचा मगर उसका जंगलीपन कम किया जा सकता है उसे वश में किया जा सकता है बड़ा दिलचस्प दोस्त होगा वह।'

इधर इस नई अपरिचित अनुभूति ने उसके मन में भी खलबली पैदा कर दी। मगर कुछ इस तरह कि उसकी रेखाएं मन में स्पष्ट न थी, वह उसे समझ नहीं पाता था और उसका विद्रोही मन परेशान था। पावेल के लिए तोनिया का बाप भी लेशचिन्स्की वकील के ही वर्ग का है।

पावेल गरीबी में पला था और अमीरों के प्रति उसके मन में नफरत कूट कूट कर भरी थी। उनको वह अपना दुश्मन समझता था। इसी लिए तोनिया के प्रति उसके मन में शंका सन्देह की भावना थी। तोनिया उसके लिए राजगीर की लड़की गलीना की तरह सीधी-सरल न थी। तोनिया से बात करते समय वह सावधान रहता कि उसकी तरफ से हलके से व्यंग्य अथवा उपेक्षा का आभास मिलते ही तत्काल उसका जवाब दे सके। क्योंकि उसे डर लगा रहता कि तोनिया जैसी सुन्दर और सुसंस्कृत लड़की उस जैसे साधारण आग झोंकने वाले के प्रति व्यंग्य और उपेक्षा नहीं तो और क्या दिखायेगी।

परन्तु तोनिया ने ऐसी कोई हरकत नहीं की जिससे पावेल नाराज़

काली भा, पीला सा रग जिसम अविराम भोग विलास के कारण कुछ हरापन भी मिला हुआ था।

क्रांति से पहले कनल गोलुव एक शहर के कारखाने म सम्बद्ध चुकन्दर के खेतो म कृषि विशेषज्ञ थे। मगर उस मन के पद के मुताबिक वह एक बिल्कुल ही नीरस जिन्दगी थी। इसीलिए ऐसा हुआ कि जब सारे देश को अपनी लपट म लेते हुए स्याह लहरें बही तो उन लहरो के शिखर पर सवार होकर कृषि विशेषज्ञ गोलुव हुजूर कनल गोलुव बन गए।

शहर म लूट पाट पूरे जोर पर थी। उसी मे कभी कभी लुटेरे लूट के माल के बटवारे को लेकर जगली जानवरो की तरह आपस म लड पडते और यहा वहा तलवारें चमक उठती। घूस तो सभी जगह धडल्ले से चल रहे थे। बियर के मैदान म से पच्चीस गैलन वाले पीपे बाहर लुढका कर सडक की पटरी पर इकट्ठे किए जा रहे थे।

फिर लुटेरो ने यहूदियो के घरो म घुसना शुरू किया।

कोई प्रतिरोध नही हुआ। वे तमाम कमरो म गए जल्दी जल्दी एक एक कोने को उलटा पलटा और लूट का माल लाद कर चलते बने। अपने पीछे वे कुछ छोड गए थे तो कपडा के बिखरे ढेर और तलवार की नोक से छिदे हुए गद्दो और तकियो के अन्दर म झाकते चिडियो के पर।

●●

यह एक काली, भयानक व डरावनी रात थी। मगर फिर भी एक आदमी सडक पर चला जा रहा था। कोचाग्नि के मकान पर पहुचकर उसने सावधानी से खिडकी पर दस्तक दी। पावल एक भयानक व डरावना सपना देख रहा था। वह जगा तो उसने खिडकी का खडखडाना सुना।

वह घर म अकेला था।

कौन है?' उसने अधेरे म पूछा।

मैं हू जुखराई। एक रुधी हुई आवाज ने जवाब दिया। फिर पियादार ने फुसफुसाकर पूछा— मैं तुम्हारे साथ रात गुजारने आया हू। तुम्हे कोई आपत्ति तो नही कामरेड?

पावेल ने आतरिक स्नेह से उत्तर दिया— कैसी बात करते हो! तुम जानते हो यहा पर सदा तुम्हारा स्वागत है। कूद कर अन्दर आ जाओ।'

फियादोर न थोडी सी खुली खिडकी म से झुककर अपने विशाल शरीर को अन्दर किया। पावल खुश था कि जुखराई आ गया। जुखराई का अचानक आगमन और फिर बाद म जो वह पावेल के साथ आठ दिन तक रहा उन्होन पावेल की जीवन धारा पर असर डाला। उस मल्लाह ने उस सबस पहल उन अनेक चीजो की अन्तर्दृष्टि दी जो नई थी, गति शील थी, महत्त्वपूर्ण थी।

जुखराई जो भाषा बोलता वह सीधी साफ होती और आखो के सामने चित्र खडा कर देती थी। उसके मन म कोई सशय नही था और उसे अपनी राह अपने सामने साफ साफ फैली दिखाई देती थी और पावल समझ गया कि यह जो बडे बडे नामो वालिया बीसियो राज नीतिक पार्टिया है—सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी सोशल डैमोक्रैट पोलिश सोशलिस्ट—सब असल म मजदूरो की जानी दुश्मन है और अमीरो के खिलाफ मजबूती से लडने वाली क्रान्तिकारी पार्टी केवल बोल्शविक पार्टी है। पहले पावेल का दिमाग इन सब चीजो के बारे म बुरी तरह उलझा हुआ था।

सच बतलाओ फियोदार तुम क्या हो? पावेल न एक बार उससे पूछा।

तुम नही जानत?

मरे ख्याल स तुम बोल्शेविक या कम्युनिस्ट हो। पावेल धीमी आवाज म बोला।

इस पर जुखराइ ठठाकर हस पडा और चुस्त, धारादार जर्सी से ढकी अपनी खूब चौडी छाती पर हाथ मारा 'तुमन ठीक कहा दोस्त! यह बात उतनी ही ठीक है जितना कि यह कि बोल्शेविक और कम्यु निस्ट एक ही होत है। फिर वह एकाएक गभीर हो गया। 'लेकिन तुमन जब यह बात समझ ली है तो इस अपने ही तक रखना। अगर तुम यह नही चाहते कि मैं पकडा जाऊ तो इस किसी स किसी जगह मत कहना। समझ '

पावल न दृढता स जवाब दिया हा मैं समझ गया।

तभी सहन म आवाजें सुनाई दी। जुखराई का हाथ भर उसका

जेब मे रखी पिस्तौल पर चला, मगर फिर बाहर आ गया जब उसने कम जोर और पीले सर्गेई बुजाक को सिर पर पट्टी बाधे अपनी बहन वालिया और क्लिम्का के साथ कमरे म दाखिल होते देखा।

जुखराई इन तीनो नौजवानो को जानता था क्योकि वह कई बार सर्गेई बुजाक के घर जा चुका था। उसे ये लडके बहुत पसन्द थे सघर्ष के भवर मे अभी उन्हे अपनी जगह नही मालूम थी मगर अपने वर्ग की आकाक्षाए उनमे अच्छी तरह व्यक्त थी। उस शाम को जुखराई ने उन्हे बोल्शेविकों और लेनिन के बारे मे बहुत कुछ बताया और इस तरह होने वाली घटनाओ को समझने मे उन्हे मदद पहुचाई।

जुखराई हर शाम निकल जाता था और बहुत रात गये लौटता था। शहर छोडने से पहले उसे अपने उन साथियो के साथ बहुत सी बातो का फैसला करना था जो शहर म रुकने वाले थे—यानि यह कि क्या काम करना होगा, कैसे करना होगा।

इस खास रात को जुखराई वापस नही आया। पावेल के मन म अस्पष्ट आशका उठी। उसने जल्दी जल्दी कपडे पहने और क्लिम्का के घर जुखराई के बारे मे खबर लेने गया। वहा से कोई खबर न पाकर वह सर्गेई के यहा गया। वहा भी कोई खबर न मिली तो उसने अपने मन का डर कह दिया। इस पर वालिया बोली 'तुम इतने परेशान क्यो हो? हो सकता है वह किसी दोस्त के यहा रुक गये हो। मगर उसके शब्दो म स्वय विश्वास की कमी थी।

घर वापस आया तो दरवाजे पर ताला पहले की तरह ही बन्द था। क्या किया जाय कुछ सोचकर उसने उस गुप्त जगह से चिथडो म लिपटा मानलिकर रिवाल्वर निकाला और उसे साथ लेकर स्टेशन की ओर चल दिया।

पर वहा भी जुखराई की कोई खबर न मिली। लौटते हुए जगलो के हाकिम के बगीचे के पास पहुचकर, जो अब उसका परिचित था उसके कदम धीमे हो गए।

तानिया से उसका आखिरी झगडा सबसे तेज रहा था। इसका कारण थे लिजा सुखार्को जो एक खूबसूरत मद्धम रंग की हाई स्कूल

तो उसका बेजान शरीर वहीं ढेर हो गया और सडक के पास के गड्ढे में जा गिरा।

जिन मजबूत हाथो ने वे घूसे रसीद किए थे उन्होने पावेल को जमीन से उठाया और उसे अपने पैरो पर खडा किया।

विक्टर अभी उस दोराहे से करीब सौ कदम गया था। तभी उसे राइफिल दगने की आवाज सुनाई दी। विक्टर गोली की आवाज की दिशा मे भागा। कुछ ही देर मे वह वहा पहुच गया। बहुत से लोग सडक पर जमा हो गए थे। उन्हें शहादत देने के लिए रोक लिया गया था। उनमे विक्टर और लिजा भी थे।

लिजा डर के मारे अपनी जगह पर जम-सी गई थी, इसलिए उसने भागते हुए जुखराई और कोर्चागिन को अच्छी तरह देखा था। और उसे इस बात पर बहुत हैरानी थी कि सिपाही पर हमला करने वाला वही लडका था, जिसे तोनिया घर पर उससे मिलाना चाहती थी। यह बात लौटते हुए उसने जब विक्टर को बताई तो वह ठगा-सा रह गया।

'तुमने यह बात कमाडर को क्यो नही बताई ?" वह बोला।

यह सुनकर लिजा को क्रोध आ गया "तुम सोचते हो, मैं ऐसी कमीनी हरकत कर सकती हू ? उसने कहा।

'कमीनी ? सिपाही पर किसने हमला किया यह बताने को तुम कमीनी हरकत कहती हो ?" वह बोला।

और नही तो क्या, यह कोई अच्छी हरकत है ? तुम शायद भूल गये हो कि उन्होने क्या-क्या किया है ? तुम्हे कुछ पता है कि स्कूल मे कितने यहूदी लडके हैं जिनके मा बाप मार डाल गए हैं और तब भी तुम चाहते हो कि मैं कोर्चागिन के बारे म बता देती ? मुझे दुख है, मैं तुम्हे ऐसा नहा समझती थी।'

विक्टर को लिजा के जवाब स बडा आश्चर्य हुआ। किंतु वह उससे झगडा नही करना चाहता था। अत उसने बातचीत का विषय बदल दिया। अलबत्ता उसका मन कोर्चागिन से बदला लेने के लिए, सुनहरा अवसर हाथ लगने से, बल्लियों उछल रहा था।

लिजा को उसके घर के पास छोडकर वह वापस कमांडेन्ट के दफ्तर

तक गया और दरवाजे से अन्दर घुस गया।

थोड़ी देर बाद वह चार पेतल्युरा सिपाहियों के संग कोर्चागिन के मकान की तरफ चला जा रहा था।

पावेल की पीठ पर आखिरी प्रहार हुआ जिसने उसे ढकेल कर उस अंधेरे कमरे मे डाल दिया जहा पर वे लोग उसे ले गए थे। उसकी फैली हुई बाह सामने की दीवार से जा टकराई। अपने आस-पास टटोलते हुए उसको ओठे जैसी कोई चीज मिली और वह बैठ गया। उसका शरीर और मन दोनो घायल थे और दर्द कर रहे थे।

उसकी गिरफ्तारी बिलकुल अप्रत्याशित थी। आखिर उन पेतल्युरा सिपाहियो को उसका पता कैसे चला ? यह सवाल बार बार उसे तग कर रहा था क्योकि उसे पूरा विश्वास था कि जुखराई को छुडाते समय उसे किसी ने नही देखा था। मगर इसका कोई जवाब उसके पास नहीं था।

घर से कोतवाली तक का सफर एक ऐसी चीज थी जिसे पावेल कभी नही भूलेगा। रात काजल की तरह काली थी और आसमान पर बादल छाये हुए थे। वह चारो ओर से बेरहम ठोकरें खाता हुआ अंधे और नीम-पागल आदमी की तरह किसी प्रकार लुढकता हुआ चल रहा था।

अगले कमरे मे, जिसमे कमाण्डेन्ट के संतरी रहते थे, दरवाजे के पीछे उसे आवाजें सुनाई दी। पावेल उठ खडा और दीवार के सहारे-सहारे रास्ता पहचानता हुआ कमरे का चक्कर लगा आया। ओठे के सामने उसे एक खिडकी मिली जिसमे ठोस लोहे के नुकीले डडे लगे हुए थे। जाहिर है, यह जगह माल असबाब रखने के काम आती होगी।

उस रात वह बहुत-कुछ सोचता रहा। लडाई मे हिस्सा लेने की उसकी पहली कोशिश का नतीजा उसके लिए बुरा ही हुआ था। पहले कदम पर ही वह पकडा गया था। और अब चूहेदानी मे चूहे की तरह फँसा पडा था।

खिडकी मे से रोशनी आ रही थी और फर्श पर एक भूरे रग का चौकान बना रही थी।

अंधेरा धीरे धीरे हट रहा था। पौ फट रही थी।

••

एक पुराने खस्ता हाल कोच के सिरे पर, जो नगर कमाडेन्ट के कमरे मे

रखा था एक नौजवान किसान औरत कुहनियां घुटनों पर टिकाये फर्श पर सूनी आंखें जमाये बैठी थी। कमाडेन्ट मुह के कोने में दबी एक सिगरेट को चबा रहा था। उसने अभी एक कागज पर बड़े बांकपन के साथ कुछ लिखकर "शेपेतोवका नगर कमाडेन्ट सोरूजी" के नाम से खूब बना बना कर दस्तखत किए थे।

सलोमिगा उसके सामने स्टूल पर बैठा था और उस रिपोर्ट को दख रहा था जो हेडक्वार्टर भेज कर पावेल को खतम करने की आज्ञा पाने के बारे मे सोरूजी ने तैयार की थी। साथ साथ सोरूजी उसको बता रहा था मैं पाच दिन स उसके पीछे लगा हू, मगर वह इसके सिवा कुछ नहीं कहता कि मैं कुछ नही जानता और मैंने उसे नही छुडाया। बडा मर्दूद लडका है साहब ! उस सिपाही न जिसपर उसने हमला किया था, उसको पहचान लिया है—और उसे देखते ही वह गुस्से स पागल हो गया था। उसका बस चलता तो उसने वही उसका गला घोट दिया होता। और भई सच पूछो तो गुस्से के लिए उसके पास कारण भी था, क्योंकि स्टेशन कमाडेन्ट ग्रोमेलचेंको ने स्टेशन पर हाथ स कैदी निकल जाने देने के जुर्म मे, अपनी राइफिल साफ करने की छडी से पच्चीस छडियां भी तो उसके लगाई। अब उसको यहा और बन्द रखने मे कोई तुक नही। इसलिए मैं यह कागजात हेडक्वाटर भेजकर इजाजत मगा रहा हू ताकि इस हराम जादे को खतम कर दिया जाय।'

सलोमिगा ने नफरत स थूक दिया।

'जहा तक इस चीज का ताल्लुक है,' सलोमिगा न कागजात पर अपनी उगली गडाते हुए कहा अगर तुम वाकई उसका काम तमाम करना चाहते हो तो सोलह की जगह उसकी उम्र अठारह दिखलाओ। छ को आठ बना दो नही तो मुमकिन है वे लोग पास न करें।'

उस मालगोदाम वाली कोठरी म तीन लोग थे। एक दढियल बुड्ढा तार-तार कोट पहने ओटे पर लटा हुआ था। उसे इसलिए गिरफ्तार किया गया था कि उसके यहा जिन पेतल्युरा के सिपाहियों को टिकाया गया था उनका घोड़ा उसके शेड स गायब हो गया था। एक अधेड औरत

जिसकी छोटी छाटी चपल आखें थी और नुकीली-सी ठुड्डी थी और जो समोगन शराब बचकर अपना जीविका चलाती थी उस इसलिए गिरफ्तार किया गया था कि उस पर एक घडी व कुछ दूसरी बेशकीमती चीजें चुराने का अभियोग था। कोर्चागिन नीम-बेहोशी की हालत मे खिडकी के नीचे एक कोन म अपनी कुचली हुई टोपी का तकिया लगाये लेटा था।

एक नौजवान स्त्री उसी माल गोदाम म लाई गई। वह सिर पर एक रगीन रूमाल बाधे थी और दहशत के मारे उसकी आँखें फटी जा रही थी। एक-दो पल वह खडी रही और फिर शराब बेचन वाली औरत के बगल म बैठ गई।

यह ख्रिस्तिना थी, एक लाल छापमार बाल्शेविक ग्रित्स्का की बहन, जो गरीब किसाना की कमेटी का प्रधान रह चुका था। बोल्शेविक जब वहाँ से चले तो वह भी मशीनगन की पटी कमर म बाध उनके साथ चला गया। अब मौजूदा अधिकारी हाथ धोकर उसके परिवार के पीछे पडे थे। और अभी एक रोज पहले जब कमाडैण्ट एक तलाशी के सिलसिले म गाँव आया था तो चौधरी उसे लेकर उस लडकी के घर पहुच गया। लडकी कमाण्डट साहब की आँख मे चढ गई और दूसरे रोज सवेरे वह उसको पूछताछ के लिए' अपन सग शहर ले आया।

शाम होते-होते एक नया कैदी लाया गया। पावेल ने उसे पहचान लिया। वह दोलिनिक था शकर के कारखान का एक बढई। वह बहुत ठोस मजबत चौडा चकला आदमी था।

पावेल न १९१७ के फरवरी महीन मे उसे देखा था जब क्राति की थरथरी उनके शहर मे पहुची थी, उन दिना जो शोर-गुल से भरे प्रदशन हुए थ, उनम उसने सिफ एक बोल्शेविक को बोलते सुना था, और वह बोल्शेविक था यही दोलिनिक। उसन सैनिको को सम्बोधित करते हुए भाषण दिया था। पावेल को अब भी उसके अतिम शब्द याद थे

'फौजी भाइयो बाल्शेविको के पीछे-पीछे चलो, वे तुम्हारे साथ दगा नही करेंगे।'

तब से उसने उस बढई को नही देखा था।

दूसरे रोज एक और नया कैदी लाया गया—बड-बड कानो और

दुबली पतली गर्दन वाला हज्जाम श्ल्योमा जेल्टसर जिसे शहर मे हर कोई जानता था।

यह दोलिनिक को बहुत आवेश और भाव भगिमा के साथ बतला रहा था ' तुम तो जानते ही हो कि मुझे अपनी जबान पर काबू नहीं और आज जब मैं एक अफसर की दाढी बना रहा था, तो मैंने कहा आपका क्या ख्याल है एटमन पेतल्युरा को इस सब मारकाट के बारे मे पता है या नही ? क्या वे डेपुटेशनसे मिलेंगे ? अरे बाप रे बाप कितनी बार मैं अपनी इस निगोडी जबान के कारण मुसीबत म फसा होऊगा ! तो जब मैं बहुत करीने से उस अफसर की दाढी बना चुका और ढग से चेहरे पर पाउडर-साउडर लगा चुका तो जानते हो उस अफसर ने क्या किया ? वह उठा और पैसा देना तो दूर रहा उसने मुझे अधिकारियो के खिलाफ प्रचार करने के जुर्म मे *गिरफ्तार कर लिया।*" जेल्टसर ने अपनी छाती ठोकी और बोला ' अब तुम्ही बताओ कि यह भी भला कोई प्रचार था ? आखिर मैंने उस आदमी से सिर्फ एक बात ही तो पूछी और उसके लिए उन्होंने मुझे यहाँ लाकर बद कर दिया वाह रे !

दोलिनिक को बेसाख्ता मुस्कराहट आ गई जब उसने गुस्से से भरे श्ल्योमा की बात सुनी।

जिस प्रकार अप्रत्याशित रूप से पावेल गिरफ्तार हुआ था, उससे भी कहीं अधिक अविश्वसनीय ढग से वह रिहा हुआ। कर्नल चर्नीटाक ने जो चीफ एटमन के किसी भी क्षण आगमन की खबर देने आया था, शहर कमा डैंट को वहाँ न पाकर कैदियों से पूछा कि उन्हें क्यो बन्द किया गया है तो सभी ने तरह-तरह के मामूली व हास्यास्पद कारण बताए। एक एक कर *उसने पावेल-सहित सभी को छोड दिया—एक हज्जाम श्ल्योमा जेल्टसर* को छोडकर। वह उसे अधिक सगीन अपराधी लगा और उसने उसे पूछ ताछ के लिए हेडक्वाटर पहुचाने का आदेश दिया।

कैदखाने से छूटकर पावेल भाग निकला। भागते भागते जब वह थक गया तो कहाँ जाये ? यह समस्या खडी हो गई। जब और कुछ न सूझा तो उसके कदम अपने आप तोनिया के घर की ओर उठ गये। तोनिया को पावेल की गिरफ्तारी का पता चल चुका था। वह उसे लिवा

सुखार्की ने बताया था जो घटनास्थल पर मौजूद थी। तोनिया ने उसके घर जाकर सारी बात उसके भाई भार्तेम को बता दी थी।

एकाएक पावेल को सामने पाकर तोनिया की खुशी का ठिकाना न रहा। वह उसे घर के अन्दर ले गई। पावेल की रिहाई की खबर उसने भार्तेम व सर्गेई ब्रुजाक तक भी पावेल के कहने पर पहुचा दी। सभी उससे मिलकर बहुत खुश हुए। पावेल ने उन्हें बताया कि जल्द से जल्द उस यह शहर छाडकर कही दूर चले जाना होगा, क्योंकि जल्दी ही पतल्युरा के सिपाहिया को अनजाने मे उसे छोड दिए जाने की अपनी भूल का पता चल जायगा और तब वे उसे शिकारी कुत्तो की तरह ढूढने लगेंगे। पावेल के इस विचार पर सभी सहमत हुए।

पावेल चार दिन तोनिया के घर ठहरा। इन दिनों मे दोना न एक-दूसरे पर अपना प्यार व्यक्त कर दिया और वादा किया कि जैसे ही हालात कुछ ठीक होंगे दोनो फिर मिलेंगे और साथ-साथ जीवन बिताने का फसना करेंगे। भार्तेम ने अपने साथियो से जो रेल इजन ड्राईवर थे, पावेल को गाँव पहुचाने की बात कही, तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक यह जिम्मेदारी ले ली। और एक दिन सुबह, जब अभी सूरज भी नही निकला था, पावेल तोनिया और भाई से विदा लेकर अपनी इतजार कर रहे इजन म चढ गया।

••

कई दिन के भयानक सघर्ष के बाद लाल सेना न पेतल्युरा के भाडे के सिपाहियो को शपेतोवका से निकाल बाहर किया और फिर से नगर पर लाल झडा लहराने लगा था।

सर्गेई ब्रुजाक भी अब लाल सेना का सिपाही बन चुका था। स्टेशन पर कब्जा करने के लिए किए गए मशीनो के हमले मे उसने भी वीरता से हिस्सा लिया था। अब वह एक बोल्शेविक था।

दो दिन बाद उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग, कोमसोमोल, की नगर कमिटी बन गई थी। यह, सर्गेई, कोमसोमोल और कोमसोमोल कमिटी का मत्री बना। उसने अपनी छोटी बहन, वालिया, को भी को

सोमोल बनाया। किंतु उसकी सदस्यता को गुप्त रखा गया, क्योंकि इसस सर्गेई की मा की नाराजगी व दुख बढने का खतरा था।

शहर का नौजवान थियेटर हाल स्कूल कालेज के विद्यार्थियो से भरा हुआ था। पहले उण्ज्द कमेटी के मत्री कामरेड राजिन ने श्रोताओ को उस सघष के बारे मे बताया जो सारे देश म तूफान की तरह चल रहा था और तमाम नौजवाना को कम्युनिस्ट पार्टी म आने के लिए कहा। इसके बाद सर्गेई अुजाव की बारी आई। उसन बिना किसी भूमिका के फौरन काम की बात शुरू कर दी

'हा तो साथियो जो सारी बातें कहने की थी, आपने सुन ली है। अब काम करने की बात यह है कि हमे पार्टी का ऐसा केन्द्र सगठित करना है जिसके इद गिद तमाम लोगा को बटोरा जा सके। कौन लोग इससे सहमत हैं?

उपस्थित लोगो म सन्नाटा छा गया। जो खाई बन गई थी, उस कोमसोमोल रीता उस्तिनोविच ने भरा। उसन लोगा को बताया कि किस तरह मास्को म नौजवानो का सगठन हो रहा है। उसकी बात खत्म हुई तो फिर हाल म सन्नाटा छा गया।

सन्नाटे को भग किया मिशा लेव्कुकोव ने, जो भालू की तरह भारी भरकम था और भेंगेपन के कारण तिरछा देखता था।

'जो मौजूदा हालत हैं उसने कहा, ' उसम हमे बोल्शेविको की मदद करनी ही होगी। मैं इसके हक मे हू। मैं कोमसोमोल मे दाखिल हो रहा हू।

सर्गेई का चेहरा खुशी से चमकने लगा। वह चिल्लाकर बोला 'देखा साथियो! मैं सदा कहता था कि मिशा हममे स एक है। मैं उस जानता हू। इसका पिता स्विचमन था और मोटर स कुचल कर मर गया था और इसीलिए मिशा की पढाई नही हो सकी। लेकिन इस वक्त किस चीज की जरूरत है यह जानने के लिए उसे किसी कालेज म जाने की जरूरत नहीं पडी।'

हाल में बड़ा शोर मचा। ओकूनेव ने, जिसके बाल करीने से कढ़े हुए थे और जो नगर के दवाफरोश का लड़का था, बोलने की इजाजत

मागी। वह कालेज मे पढता था।

"ग्राप लोग मुझे माफ करेंगे साथियो ! मेरी समझ मे नही ग्रा रहा कि हमसे क्या चाहा जा रहा है ? क्या हमसे यह उम्मीद की जाती है कि हम राजनीति मे हिस्सा लें ? ग्रगर ऐसी बात है तो मैं पूछता हू, हम लोग पढेंगे कब ? हम कालेज की पढाई खत्म करनी ही ह। ग्रगर यह कोई खेल-कूद की सोसायटी या ऐसे क्लब के सगठन की बात होती जहा हम लोग इकट्ठे हो सकते ग्रौर पढ सकते, तो बात दूसरी थी। मगर राजनीति मे तो हिस्सा लेने का मतलब है, ग्रागे चलकर फासी पर टगने के खतरे को भी उठाना। न भाई मैं नही समझता कि कोई इस बात स सहमत होगा।"

हाल मे लोग हस रहे थे। किन्तु हाल के कोने म दरवाजे क पास नौजवान लाल सैनिको की टोली म बैठा सर्गेई ब्रुजाक का दारत नौजवान तोपची बोलने के लिए खडा हुग्रा। उसने क्रुद्ध भगिमा म ग्रपनी टोपी माथे पर ग्रौर नीची कर ली ग्रौर श्रोताग्रो को तीखी नजरा स देखता हुग्रा गरज कर बोला

'तुम हस किस चीज पर रहे हो कीडा !"

उसकी ग्राखें दो जलते हुए ग्रगार थे ग्रौर वह गुस्से से काप रहा था।

' मेरा नाम इवान जार्की है। मैं यतीम हू। मैं सडको पर पला ग्रौर बढा हू। मैं रोटी के एक एक टुकडे क लिए भीख मागता था ग्रौर ग्रक्सर मुझे भूखे पेट सो जाना पडता था। मैं तुम्हें बतला सकता हू कि मैं एक कुत्ते की जिंदगी बिता रहा था। तुम सब, जो ग्रपनी माग्रा के लाडले यहा इकट्ठ हुए हो, तुम्ह इसके बार म कुछ भी पता न होगा। तब बाल्शेविक राज ग्राया ग्रौर लाल सेना के लोगो न मुझे सडक पर से उठाया ग्रौर मरी देख भाल की। उनकी एक पूरी प्लाटून ने मुझे गोद लिया। उन्होन मुझे कपडे दिए। उन्हो। मुझे लिखना पढना सिखाया। मगर इन सबसे बडी चीज यह है कि उन्होन मुझे सिखाया कि इन्सान बनना किसे कहते हैं। उन्ही के कारण मैं बोल्शेविक बना ग्रौर ग्राखिरी सास तक बोल्शेविक रहूगा। मैं खूब ग्रच्छी तरह से जानता हू कि हम किस चीज के लिए लड रहे है। हम लोग लड रहे हैं ग्रपने ही जैसे गरीबो

के लिए। हम लोग मजदूरो की हुकूमत के लिए लड रहे हैं। तुम लोग यहा बैठ चवर चवर बातें कर रहे हो। मगर तुम्हें नही मालूम कि इसी शहर के लिए लडते हुए हमारे दो सौ साथी मारे गए हैं। उन्होने अपने जीवन का बलिदान कर दिया ' जार्की की आवाज खिचे हुए तार की तरह गूज रही थी। ' उन्होने हमारे लिए, हमारे सुख के लिए हमारी खुशी के लिए हसते हसते अपनी जान दे दी । देश भर मे तमाम मोर्चों पर लोग मर रहे हैं और तुम लोग यहा बैठे हुए गाल बजा रहे हो ! साथियो !'' सभापति मडल की ओर तेजी से मुडते हुए उसने कहा 'आप लोग बेकार मे इन लोगो से बात करने म अपना वक्त जाया कर रहे है। और फिर हाल की तरफ इशारा कर बोला आप लोग समझते हैं कि य लोग आपकी बात समझेंगे ? नही ! भरा पेट कभी खाली पेट का साथी नही होता। इनमे स सिर्फ एक आदमी आगे आया है और वह इसलिए कि वह भी गरीब है, यतीम है। मगर कोई बात नही, उसने उपस्थित लोगो पर गुस्से से गरजते हुए कहा, हम लोग तुम्हारे बिना भी अपना काम चला लेंगे। हम लोग तुमसे भीख नही मांगेंगे कि आईये और हमसे शरीक होईये। जहन्नुम मे जाओ तुम लोग ! तुम लोगो से बात करने का अकेला तरीका मशीनगन है ! और इसके बाद वह मच से उतरा और बिना दायें बाए देखे सीधे दरवाजे की ओर बढा।

●●

एक शाम पावेल की मा मारिया याकोवलेवना ने खिडकी के बाहर आर्तेम के पावो की आहट सुनी। आज वह जल्दी आ रहा था। उसने धक्का देकर दरवाजा खोला और एलान किया मैं पावका का एक चिट्ठी लाया हू।'

पावेल ने लिखा था

प्यारे भाई आर्तेम यह मैं तुम्हें बताने के लिए लिख रहा हू कि मैं जिन्दा हू हालांकि मेरी हालत अच्छी नही है। मेरे कूल्हे मे गोली लगी थी लेकिन अब मैं अच्छा हो रहा हू। हुआ यह कि मैं कामरेड कोतोव्स्की की घुडसवार ब्रिगेड म भरती हो गया। कामरेड कोतोव्स्की के बारे मे तुमने जरूर सुना होगा क्योंकि वह अपनी बहादुरी के लिए

बहुत मशहूर है। अपने कमांडर के लिए मेरे मन म बहुत श्रद्धा है। क्या मा घर लौट आइ ? अगर लौट आई हो तो उन्हे मेरा प्यार देना। मैंने तुम्हें जो भी तक्लीफ दी हो, उसके लिए मुझे माफ करना। तुम्हारा भाई पावेल।

"आर्तेम, जरा जगल के वार्डेन के यहा चले जाना और वहा लोगो को इस खत के बारे म बतला देना।

पावेल की चिट्ठी सुनकर मारिया याकोवलेवना बहुत रोई। कैसा पागल लडका है, उसने अपने अस्पताल का पता भी नही दिया!

●●

दो महीने बाद पतझड के दिन आ गए।

रात की काली चादर तनी हुई थी। किंतु डिवीजन हेडक्वाटर का तार-बाबू अपने टिक टिक टिक टिक करते हुए यत्र पर झुका हुआ था और कागज के लम्बे पतले फीते साप की तरह उसकी उगलियो के इर्द-गिर्द लिपटते जा रहे थे और वह जल्दी जल्दी उनके डाटो और डशो को शब्दो और वाक्यो का रूप देता जा रहा था

"चीफ आफ स्टाफ, पहली डिवीजन। नकल शेपेतोवका इक्लाबी कमिटी के चेयरमैन को। तार को पाने के दस घटे के अन्दर अन्दर सारे सरकारी दफ्तर शहर से हटा दो। शहर म एक बटालियन रेजिमेंट के कमाडैण्ट के चाज मे छोड दो। वही इस मोर्चे के कमाडर हैं। डिवीजन हेडक्वाटर्स, राजनीतिक विभाग, सारी फौजी सस्थाए बरावेव स्टेशन मे ले जाओ। डिवीजन कमाडर को रिपोट करो कि हुक्म पूरा किया गया। (दस्तखत)

दस मिनट बाद एक मोटर साईकल इक्लाबी कमिटी के फाटक के सामने रुकी। उसका सवार जल्दी जल्दी अन्दर गया और उसने यह तार चेयरमैन दोलिनिक के हाथ म दिया। फौरन उस जगह हलचल शुरू हो गई। एक घटे बाद इक्लाबी कमिटी के माल असबाब से लदी हुई गाडिया शहर के बीच होकर पोडोल्स्क स्टेशन की ओर चल पडी।

एक मशीनगन की आवाज ने खामोशी को भग कर दिया। नये स्टेशन से एक इजन की सीटी सुनाई दी और उसके ठीक

स ताप दगने की आवाज आई। पीछे हटते हुए लाल सनिक एकदम चुपचाप और गम्भीर किसी कठोर सकल्प की मूर्ति बने, सडक पर माच करते हुए चले जा रहे थे। सर्गेई रह रह कर पीछे मुडकर औरो की तरह देखता जाता था।

अलविदा मेरे प्यारे शहर तुम जो अपनी सारी वदसूरती और गदगी के बावजूद अपने बदसूरत छोटे छोटे घरो और टेढी मेढी सडको के बाद भी हम इतने प्यारे लगते हो। विदा मेरे प्यारो। विदा विदा वालियो और मेरे साथियो जो गुप्त रूप से काम करने के लिए रुक रहे हो। बेरहम क्रूर विदेशी पोलिश ल्हादाट गाड दस्ते पास आ रहे है।

रेलवे मजदूरो ने उदास आखो से लाल फौज के सैनिको को जाते देखा।

सर्गेई ने दुखत हुए दिल स चिल्लाकर कहा, हम लोग लौट कर आयेंगे साथियो!

५ जून १६२० को बुद्योनी की पहली घुडसवार फौज दो चार छोटी मगर भयानक लडाइया के बाद तीसरी और चौथी पोलिश फौजो के बीच के पोलिश मोर्चे को चीरने म कामयाब हुई। उसने पोलिश जनरल साविकी की घुडसवार ब्रिगेड को जो उसके रास्ते में पडी थी, चकना चूर कर दिया और सैलाब की तरह रुजीनी की ओर बढी।

अपने घोडे की गर्दन पर झुका कोर्चागिन तजी म अपने साथी तोपखाने के बगल म चला जा रहा था। तोपखाने एक अचूक निशाने वाला बहादुर घुडसवार था। घोडो की नालें सडक के पत्थरो पर बज रही थी। तभी एक चौराहे पर उन्होने अपने ठीक सामने सडक के बीच एक मशीनगन को देखा। तीन पोलिश सिपाही अपनी नीली वर्दियां और आयताकार टोपिया लगाय मशीनगन पर झुके हुए थे। एक चौथा आदमी भी था जो इन घुडसवारो पर अपना माउजर ताने हुए था।

सारे घुडसवार घोडे दौडाते मशीनगन की तरफ सीधे मौत के जबडो म भागते चले गए। उस चौथे आदमी ने पावेल पर गोली चलाई, मगर निशाना चूक गया। दूसरे ही क्षण उस मशिनगनर का सिर सडक के पत्थर स जा टकराया। घोडे की टाप ने उसके पर उखाड दिए और उसका

निर्जीव शरीर चित्त होकर सडक पर बिछ गया ।

उसी वक्त मशीनगन पाशविक डरावनी तेजी से कड़कड़ाई और गोले के एक दजन छर्रे आकर तोप्ताला और उसके घोड़े को लगे और दोनो वहा जमीन पर ढेर हो गए । पावेल का घोडा डर कर हिनहिनाता हुआ जमीन पर पड़ी लाशो को फादकर मशीनगन चलाने वालो पर जा कूदा । पावेल की तलवार हवा मे आधा गोल दायरा बनाती हुई चमकी और एक नीली टोपी को चीरती हुई अन्दर घुस गई । दूसरे के सिर पर टूटने के लिए तलवार दोबारा चमकी मगर बौखलाया हुआ घोडा दूसरी ओर बहक गया ।

एक पहाडी तूफानी नदी की तरह हरहराता हुआ घुडसवार दस्ता अब सडक के दोराह पर आ गया और हवा मे बीसियो तलवारें चमक रही थी ।

जेल के तग लम्बे गलियारो मे आवाजें गूज रही थी ।

पावेल एक बद कोठरी की ओर दौडा जिसमे ताला लगा हुआ था । इस कोठरी की नन्ही सी खिडकी से दजनो आँखें बेताबी से झाक रही थी । पावेल अपनी राइफ्लि के कुदे मे बार बार ताले पर चोट मार रहा था ।

'साथियो, तुम लोग आजाद हो । हम बुद्योनी के आदमी हैं । हमारे डिविजन ने शहर पर कब्जा कर लिया है ।" कोठरी के दरवाजे को धक्का देकर खोलते हुए पावेल ने ऊचे स्वर मे घोषणा की ।

इन पाच हजार एकहत्तर बोल्शेवको और लाल सेना के दो हजार राजनीतिक कर्मियो की—जिन्हें पोलिश क्राति विरोधियो ने इन पत्थर के तहखानो मे गोली मारने या फासी चढाने के लिए बद कर रखा था, आजादी ही इस डिवीजन के सैनिको के लिए सबसे बडा पुरस्कार था । उन सात हजार क्रातिकारियो के लिए रात्रि का अभेद्य अधकार दिन के सुनहले प्रकाश मे बदल गया । एक बँदी, जिसकी खाल नीबू की तरह पीली थी, खुशी से पागल होकर पावेल की ओर दौडा । यह था सैमुअल लेखर—शेपेतोवका के प्रेस का एक कम्पोजीटर ।

सैमुअल से अपने शहर की खून मे डूबी कहानी सुनकर पावेल का चेहरा मुरझा गया और सैमुअल के शब्द पिघले हुए सीसे की बूदो की

तरह उसके दिल का जला रह थे।

लडाई के तूफानी भवर मे बहते हुए पावेल को इस बात का एहसास ही न रहा कि दिन कैसे आता है और कैसे बीत जाता है। उसका व्यक्तित्व समूह मे खो गया और दूसरे सिपाहियो की तरह उसके लिय भी "मैं" शब्द बाकी न बचा। उसके लिए बस एक शब्द था "हम," हमारी रेजिमेंट, हमारा दस्ता हमारी ब्रिगेड।

घटनाए तूफानी वेग म घटित हो रही थी। हर रोज कोई-न कोई नई बात हुआ करती। इन्ही तूफानी दिनो मे पावेल की मुलाकात नावोग्राद वोलिन्स्की स्टेशन पर बड़े भाई आर्तेम से इतन अप्रत्याशित ढग से हुई कि कुछ क्षण के लिए दोनो भाई अवाक रह गये।

'पावका! बदमाश! तू है! आर्तेम चिल्लाया जैसे उसे अपनी आखो पर इस नव उम्र लाल सिपाही को देखकर यकीन ही न आ रहा हो। उसके हाथ स तेल की कुप्पी छूट पडी जिससे अभी अभी वह इजन के बीच वाल पहिये म तेल दे रहा था और उसने पावेल को बाहो म इस तरह भर लिया जैसे कोई बडा-सा भालू किसी को अपनी बांहो मे भर ले।

बख्तरबन्द गाडी के कमांडर जिसके पास पावेल अपने ब्रिगेड कमाडर का सदेश लेकर आया था और कई तोपची वही पास ही खडे उनको देख रहे थ और खूब प्रसन्न होकर मुस्करा रहे थे।

यह घटना लवाव के इलाके म हुई एक लडाई के दौरान १९ अगस्त को घटी। लडाई के वक्त पावल की टोपी गायब हो गई और उसने अपन घोडे की रास खीची। अगल दस्ते पोलिश फौजो को काटत हुए उनकी पाता म घुस चुके थे। उसी वक्त नदी की ओर जान क अपने रास्त म झाडियो के बीच स घोड़े को सरपट दौडाता हुआ देमीदाव आया। पावल की बगल स हवा की तजी स गुजरत हुए चिल्लाकर उसन कहा 'डिवीजन कमाडर मारे गय!

पावल चौक पडा। लेतुनोव उसका बहादुर कमाडर, वह अनोखा वीर मारा गया! पावल गुस्स म पागल हो उठा। उसने घोडे को एड लगाई और सबको चीरता हुआ उस जगह जा पहुचा जहां सबसे सबस

गर्म थी।

'मार डालो इन घिनौने कीड़ों को, मार डालो! इन पोलिश नवाबों को काटकर रख दो। इन्होंने लतुनोव को मारा है!" चिल्लाते हुए उसने हरा वर्दी पहने एक आदमी पर जोर से तलवार का वार किया। अपने डिवीजन कमांडर की मौत से गुस्से में आकर उन घुड़सवारों ने पोलिश सिपाहियों की एक पूरी प्लाटून का सफाया कर दिया।

दुश्मन का पीछा करते हुए वे लड़ाई के मैदान में सरपट आगे भागे जा रहे थे तभी एक पोलिश तोप आग उगलने लगी। उसके गोलों ने हवा को चीर दिया और चारों ओर मौत की बरसात होने लगी।

एकाएक पावेल की आंखों के आगे कोई हरी सी चीज इतने जोर से चमकी कि उसने पावेल को अंधा कर दिया, उसके कानों में बिजली की कड़क का-सा शोर हुआ और लाल-लाल लोहा उसकी खोपड़ी को चीरता हुआ अन्दर चला गया।

फूस के तिनके की तरह पावेल घोड़े की पीठ पर से नीचे आ गिरा। गोले की मार से वह घोड़े के सिर के ऊपर से धरती पर बोरे की तरह भद्द से गिर पड़ा।

तभी काली रात घिर आई।

••

फौजी अस्पताल की छोटी डाक्टर नीना ब्लादिमिरोवना अपने कमरे में एक छोटी मेज के सामने बैठी हुई थी और अपनी मोटी, हल्के गुलाबी और पीले रंग की नोटबुक के पन्ने उलट रही थी। उसमें साफ सुथरी तिरछी लिखावट में यह लिखा हुआ था १४ अक्तूबर।

आज कोर्चागिन को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। उसने बड़े स्नेही और आत्मीय व्यक्ति की तरह मुझ से विदा ली। उसकी आंख पर से पट्टी अलग कर दी गई है और अब सिर्फ उसका सिर बंधा है। उस आंख में रोशनी नहीं है मगर देखने में उसमें कोई गड़बड़ नजर नहीं आती। ऐसे प्यारे नौजवान साथी से विदा होते समय बहुत दुख हुआ।

जाते जाते वह बोला "कितने दुख की बात है कि चोट बायीं आंख में नहीं लगी। अब मैं गोली कैसे चलाऊंगा?"

वह अब भी मोर्चे के बारे में सोचता रहता है।

अस्पताल से निकलने पर पावेल कुछ रोज बुरानोव्स्की के यहा रहा जहा तोनिया ठहरी हुई थी।

पावेल ने फौरन तोनिया को कोमसोमोल के काम में खीचने की कोशिश की। किंतु शीघ्र ही उसे पता चल गया कि ठाठ-बाट से रहने वाली तोनिया मैले कुचैले कपडे पहनने वाले उसके गरीब साथियो म नही रह सकेगी। दोनो म झगडा रहने लगा।

दोनो ने समझ लिया कि सबध विच्छेद अब अनिवार्य है।

वह शाम उनकी दोस्ती के खातम की शुरुआत की शाम थी। डूबते हुए सूरज की किरणो को देख तोनिया गहरी व्यथा के स्वर म बोली

हमारी दोस्ती क्या इसी डूबते हुए सूरज की तरह डूब जायेगी ?

पावेल जिसकी आखें तोनिया के चेहरे पर गडी थी, कठोरता से भवें चढाकर धीमी आवाज मे बोला, 'तोनिया, हम लोग पहले भी इस बारे म बात कर चुके हैं। तुम्हें मालूम है, मैं तुम्हें प्यार करता था और अब भी मेरा प्यार लौटकर आ सकता है। मगर उसके लिए तुम्हें हमारे *साथ आना होगा। मैं अब पहले का पावलुशा नही रहा हू।* और मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति भी नही हो सकूगा अगर तुम मुझसे यह उम्मीद करती हो कि मैं तुमको पार्टी के ऊपर तरजीह दूगा। वजह यह है कि मैं सबसे पहले पार्टी को दगूगा और तुमको और उन दूसरे लोगो को, जिनसे मैं प्यार करता हू बाद मे।

पावल ने और कुछ नही कहा।

दूसरे रोज उसने एक हुक्मनामा सडक पर चिपका हुआ देखा जिस पर असाधारण सभा के चेयरमैन जुखराई के दस्तखत थे। उसका दम *घर पावल का दिल धडकने लगा उछलकर। वह जुखराई से मिला। जुखराई* और दिल खोलकर उससे मिला। उसकी एक बाह कटी हुई थी तार के एक गोले म वह उड गई थी।

बातचीत दौरान काम पर आ गई। जुखराई ने कहा जब तक तुम मोर्चे पर जाने के लिए फिर से ठीक नही हो जाते तब तक तुम यहा पर क्रांति के दुश्मनो का सफाया करने म मेरी मदद कर सकते हो। कल से ही काम शुरू कर दो।

पोलिश क्राति विरोधियो के साथ लडाई खत्म हो गई। लाल फौजें दुश्मन को वारसा की दीवारो तक खदेड ले गईं। मगर चूकि उनकी शारीरिक और फौजी साज सामान की ताकत बहुत खच हो गई थी और उनके रसद और कुमुक के अड्डे भी बहुत पीछे छूट गय थे, इसलिए व उस आखिरी किले को फतह् न कर सकी और वापस लौट आई। पोलैंड के पूजीपतियो और जागीरदारो को नई जिन्दगी मिली।

खून मे भीगी हुई धरती कुछ आराम चाहती थी।

पावेल अपने घर वालो से नही मिल सका क्याकि शेपेतोवका फिर पोलिश फौजो के हाथ मे आ गया था और फिलहाल उनकी अस्थायी सरहदी चौकी बना हुआ था। सुलह की बातचीत चल रही थी।

पावेल काम के सिलसिले मे रात दिन चेका म रहता था। चेका का काम उसे बहुत कमजोर करता जा रहा था। उसकी सेहत बिगड रही थी और सिर मे बार बार तेज दद रहने लगा था। मगर उसने जुबराई से इस बार मे तब तक कुछ नही कहा जब तक कि एक रोज लगातार दो राता से जागते रहने के कारण वह बेहोश होकर नही गिर पडा।

इसके बाद पावेल को रेल के कारखाने मे जहा वह काम करनेवाला था कोमसोमोल सगठन का मत्री बनाया गया। उसके लिए यह काम कामरेड रिता उस्तिनोविच ने ढूढ निकाला था, जो गदुमी रग की एक गम्भीर लडकी थी।

जलते हुए सूरज की तपन से धरती कुम्हलाई जा रही थी। रेलवे प्लेटफाम के पुल की रेलिग इतनी गम हो रही थी कि उस छूते हुए हाथ जलता था। ऐस म पुल के नीचे उतर कर पावेल ने रिता को दखा। वह उसस पहले ही स्टेशन पहुच गई थी और पुल पर से उतरत हुए लोगो को दख रही थी।

पावेल उससे लगभग तीन गज की दूरी पर रुक गया। रिता ने उसको नही देखा और वह उसको एक नई सी दिलचस्पी से देखता रहा। वह धारीदार ब्लाउज और किसी सस्ते कपडे का छोटा-सा नीला स्कट पहने थी उसके कधे पर एक मुलायम चमडे का जाकेट पडा था। उसका धूप मे

तपा हुआ चेहरा उसको जैसे फ्रेम में जकड़े था और उसके रूखे बाल उ
रहे थे। उसको वैसे खड़ी देखकर कोर्चागिन को पहली बार महसूस हुआ
कि उसकी शिक्षक और मित्र रिता कामसोमोल प्रादेशिक कमिटी के ब्यूरो
की मेम्बर ही नहीं बल्कि । अपने मन में आये हुए उन पापपूर्ण
विचारों के कारण खीझ अनुभव कर उसने रिता को आवाज दी।

मैं पूरे एक घंटे से तुम्हें अपलक देख रहा हूं। मगर तुमने मुझे देख
ही नहीं वह हंसा चलो हमारी गाड़ी आ गई है।'

वे प्लेटफार्म के दरवाजे पर पहुंचे।

उसके एक रोज पहले प्रादेशिक कमिटी ने कोमसोमोल के एक जिल
सम्मेलन के लिए रिता को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था और कोर्चा
गिन को उसके सहायक के रूप में जाना था।

गाड़ी में बहुत भीड़ थी। काफी धक्का मुक्की गाली गलौज
लड़ाई झगड़े का सामना करने के बाद कहीं जाकर वे गाड़ी में जगह बना
पाये थे। डिब्बे के एक कोने में सबसे ऊपर की बर्थ पर रिता और पावेल
बैठे हुए थे। मगर वहां अखबार के बण्डलों ने इतनी जगह घेर रखी थी
कि सिर्फ रिता के लेटने भर की जगह थी। रिता थकी हुई थी और अपने
बैग का तकिया लगाये ऊंघ रही थी। पावेल बर्थ के सिरे पर बैठा सिगरेट
पी रहा था। भयानक हिचकोले से जागकर रिता ने अंधेरे में पावेल के
सिगरेट की चमक देखी। रिता ने धीमे स्वर से कहा, 'कामरेड कोर्चा
गिन! उन बुजुआ तौर तरीकों को छोड़ो और लेट जाओ।

पावेल उसकी बात मानकर उसकी बगल में लेट गया।

कल हमें बहुत काम करना है पागलराम इसलिए जरा नींद से
लेने की कोशिश करो। रिता ने बड़े विश्वास के साथ पावेल के गले में
अपनी बांह डाल दी और पावेल ने अपने गालों पर उसके बालों का स्पर्श
अनुभव किया।

रिता पावेल के लिए एक पवित्र चीज थी। वह उसकी दोस्त था
कामरेड थी एवं प्रशिक्षका थी। मगर इसके साथ ही वह एक औरत भी
थी। इस की उसका ... पहले वहां पुनः हुई थी और इसलिए
जब उसने आलिंगन में पावेल को ... करना शुरू कर लिया था। उसने रिता

की गहरी समताल मे चलती हुई सास को महसूस किया उसके पास ही वही रिता के होठ थे। इस सामीप्य से उसके अन्दर उन होठो का पाने की लालसा जगी और मन का बहुत जोर लगाकर ही वह इस लालसा को दबा पाया।

थोडी ही देर म पहियो की ताल ने थपकी दे देकर पावेल को सुला दिया। सुबह म जब इजन ने जोर स सीटी दी, तभी जाकर उसकी आख खुली।

एक रोज पावेल कारखान मे काम कर रहा था तो उसे रिता का टेलिफोन आया। उसने पावेल को परिसकम्यून की पराजय के कारणवाले अध्याय का जिसे बहुत दिना से दोनो मिलकर पढ रहे थे खत्म करने के लिए अपने घर बुलाया। शाम को पावेल जब रिता के घर गया तो उसने रिता का एक आदमी के साथ पलग पर बैठे देखा जिसने अपना परिचय डेविड उस्तिनोविच के नाम स दिया। पावेल उसे रिता का प्रेमी या पति समझा और यह कह कर, 'मुझे अभी घाट पर जहाज मे लकडी लादने जाना है। लडके नीचे खड मेरा इतजार कर रहे हैं।' वापस चला आया। पावल चूकि मन ही मन रिता मे प्यार करने लगा था इसलिए किसी अन्य पुरुष का उसके बहुत करीब देखकर सहन न कर सका।

दूसर दिन जब रिता ने टलिफोन पर पावेल को बताया कि डेविड उस्तिनोविच उसका भाई था, तो वह अपनी सोच पर बहुत शर्मिन्दा हुआ। उसने बाद मे निश्चय किया कि रिता स प्यार के सम्बन्ध को खत्म कर देना चाहिए क्योकि इसमे बहुत मानसिक कष्ट भोगना पडता है। काफी कोशिश करने पर भी वह रिता से अपने निश्चय के बारे मे साफ-साफ न कह सका और यह बहाना बनाकर कि उसकी समझाई हुई राजनीतिक बात पावल की खोपडी म नही घुसता, वह उससे अलग थलग रहने लगा। रिता का पावेल के इस व्यवहार पर बहुत दुख हुआ खुद पावल के लिए भी यह कम दुखदायी न था।

साइडिंग पर बकार इजनो और रेल के टूटे फूटे डिब्बो का कब्रिस्तान बढ चला। लकडी के वीरान कारखाने मे हवा लकडी के सूखे बुरादे का इधर उधर बिखेर रही थी।

और शहर के चारो ओर जगल की झाडियों और गहरे नालो में क्राति विरोधी ओलिक के डाकू गिरोह के लोग छिपे हुए थे। दिन को व लोग आस पास के गावो और जगली इलाका म चुपचाप पड रहन पर रात को धीरे स रेल की लाइनो पर निकल आने थे, बेदर्दी स उन्हें उखाड कर फेंक देते थे और अपना यह दुष्ट-कम कर वापस अपनी माद में पहुच जाते।

रल की लाइनें उखड जाने स न जाने कितने इजन रलव के बाधो पर से लुढकत हुए नीचे पहुच जाते थे, और नतीजा यह होता था कि डिब्बे टूटकर चकनाचूर हो जाते थे। लोग मलबे के नीचे धस जाते थे और बहु कीमती अनाज खून और मलबे मे लिथड जाता।

इस गिरोह म दो-तीनसौ खूनियो से ज्यादा न रहे होग मगर अब तक उन्हें पकडा न जा सका था। ये छोटी छोटी कई टुकडियो म बट जाते और फिर एकसाथ दो-तीन इलाको म अपनी कारवाई करते। उन सब को पकडना असभव था। पिछली रात का डाकू अगले दिन बहुत शातिप्रिय किसान दिखाई देता। उस वक्त उस देखकर कौन कह सकता था कि कल रात यही आदमी डाकू का काम कर रहा था।

इन डाकुओ को पादरियो, धनी किसानो उजडे जागीरदारो और मुनाफाखोरो तथा क्राति विरोधी इन सबके अगुआ पोलिश पूजीपतियो व जागीरदारो की सहायता व समथन प्राप्त था। अपनी रेजिमेंट लेकर अलेक्जेंडर पुजीरेवस्की जान लगाकर इन डाकुओ के पीछे लगा हुआ था और तीनो जिलो म उन्हें यहा स वहा खदेडता फिर रहा था। एक महीने बाद ओलिक को मजबूर होकर अपने बदमाशो को दो जिलो स हटाना पडा और अब वह बहुत छोटे म इलाके म घिर गया था।

जुखराई ने गुन हुए नक्शे पर उगली लगाते हुए कहा 'देखो यह बोयार्का स्टेशन है। यहा स पांच मील पर पेड गिराये जा रहे हैं इस जगह पर बीस सात दस हजार क्यूबिक मीटर लकडी का ढेर लगा है। एक पूरी फौज न इस लकडी को जमा करने के लिए आठ महीने दिन रात काम किया है। और इस सबका नतीजा ? गद्दारी ! रेलवे के लिए और शहर के लिए ईंधन नहीं है। इस तमाम लकडी को पाच मील दूर स्टेशन तक ढोने

के लिए पाच हजार गाडिया लगेंगी और एक महीना लगेगा—वह भी तब जब वो दिन मे दो बार खेपा लगाए। वहा से सबसे पास जो गाव है, वह दस मील दूर है। और इतना ही नहीं औलिक और उसके गिरोह के लोग इसी इलाके मे घूम रह हैं। तुम समझते हो कि इसका क्या मतलब है? देखो, योजना अनुसार पड गिरान की गुरुआत ठीक उस जगह से होनी चाहिए थी और वहा स फिर स्टेशन की तरफ बढना चाहिए था। लेकिन उन बदमाशो ने किया यह कि उलटी तरफ बढते हुए वे लोग उसे घने जगल म ले गए। ऐसा करन मे उनका उद्देश्य यही था कि किसी तरह हम लाग इस इधन को रेलवे स्टेशन तक ढोकर न ला सके। और उनका ख्याल कुछ गलत नही था। हम इस काम के लिए सौ गाडिया भी न मिल सकी। यह उन्होने हम पर बडा कमीना वार किया है। उनकी बगावत भी इससे ज्यादा खतरनाक न थी।

जुखराई की बद मुट्ठी जोर से नक्शे के ट्रेसिंग पेपर पर गिरी। प्रादेशिक इधन कमटी क उन तरह लोगा न जो एक बडी सी मेज के इद गिद बठ जुखराई की बात सुन रहे थे परिस्थिति के उन भयानक पहलुओ का समझ लिया जिनका उसने जिक्र नही किया था। जाडा आ रहा था। उन्होने अपनी मन की आखो से अस्पतालो स्कूलो दफ्तरा और लाखो को जाडे पाले की सद गिरफ्त मे पडते हुए देखा। उनकी आखो के आगे नाच गया कि कैस रेलवे स्टेशनो पर भीड लगी है और इस तमाम भीडको ले जाने के लिए हफ्ते म सिफ एक गाडी है।

कमर म गहरी खामोशी था।

आखिर जुखराई ने कहा "साथियो, वचत की अब सिफ एक राह है। हमे स्टेशन से जगल तक, जहा लकडी कटी पडी है तीन महीने के अन्दर अन्दर पाच मील लम्बी छोटी रेलवे लाइन बनानी है। जहा से यह इलाका शुरू होता है, वहा तक पहुचने के लिए रेलवे लाइन का पहला हिस्सा छ हफ्ते के अन्दर तैयार हो जाना चाहिए। इसके लिए हमे पचास मजदूरो और दा इजिनियरो की जरूरत हागी। पुश्चावोदित्सा मे काफी पटरिया और सात इजन है। कोमसामोल ने मालगोदामो मे से उन्हें ढूढ निकाला है। किंतु मुश्किल यह है कि बोयार्का मे मजदूरा के

रहने के लिए जगह नहीं है वह जगह बिलकुल खंडहर हो रही है। हम हर बार पन्द्रह-पन्द्रह दिन के लिए छोटी छोटी टोलियों में लोगों को भेजना होगा। कोमसोमोल संगठन अपने अधिक से अधिक सदस्यों को वहां पहुंचायेगा। कुछ शहर के लोग भी रहेंगे। काम मुश्किल है बहुत मुश्किल पर मैं समझता हूं कि अगर इन लड़कों को यह बतला दिया जाए कि दांव पर क्या चीज लगी हुई है और हालत कितनी संगीन है तो यकीन है लोग काम को पूरा करेंगे।

●●

जंगल के बीचोबीच स्टेशन की छोटी सी इमारत अकेली खड़ी थी। ताजी खोदी हुई मिट्टी की एक पट्टी माल लादने के प्लेटफार्म से जंगल तक चली गई थी। इस पट्टी में चारों ओर चींटियों की तरह आदमियों के झुंड लगे थे।

पैर के नीचे दबने पर मिट्टी का वह कीचड़ बहुत बुरा मालूम होता था। बांध के पास जहां आदमी बेतहाशा मिट्टी खोदे जा रहे थे फावड़ों और कुदालों की आवाज सुनाई दे रही थी। बारिश जैसे किसी बड़ी बारीक छलनी में से छनकर गिर रही थी और पानी की ठंडी बर्फीली बूंदें लोगों के कपड़ों में घुस रही थी। इस बात का डर था कि बारिश उनकी मेहनत के सारे फलों को उनके काम को बहा ले जायेगी क्योंकि बांध पर की मिट्टी पानी में भीगकर धसकती जा रही थी।

काम करने वाले ऊपर से नीचे तक पानी में भीगे हुए थे। उनके कपड़े इतने ठंडे थे कि सर्दी मालूम होती थी। इसी तरह वे लोग अंधेरा हो जाने के भी बाद बाद तक काम करते रहते थे।

और इस तरह हर रोज सूनी हुई जमीन की यह पट्टी जंगल की ओर बराबर बढ़ती जा रही थी।

स्टेशन के पास ही एक डरावना सा कंकाल खड़ा था जो कभी ईंट की इमारत थी। खिड़की दरवाजा रहित टूटे फूटे छप्पर वाली इस इमारत के चार कमरों में ठसाठस फर्श पर रात को चार सौ आदमी अपने गीले, कीचड़ सने कपड़े पहने सोते थे। बारिश का पानी सुराखों वाले छप्पर और खिड़की-दरवाजों के बड़े बड़े सुराखों से बराबर भीतर आता रहता था।

सबरे उन्होने उस खडहर की बारक मे, जो रसोई-घर का काम देती थी, चाय पी और काम पर चले गये। रात के खाने मे रोज-रोज वही उबली हुई मसूर खाते-खाते उनकी तबियत ऊब गई थी। उसके अलावा उन्हें कोयले की तरह काली तीन पाव रोटिया भी मिलती थी।

इससे ज्यादा देने की सामर्थ्य शहर मे न थी।

जाब-सुपरिंटेंडेंट वालेरियन पतोरिकन और टेकनीशियन—ये दोनो स्टेशन मास्टर के घर पर रहते थे। तोकारेव स्टेशन के चेका मे काम करने वाले खोलिग्रावा की कोठरी मे रहता था। वह इस मुहिम का प्रधान था।

ये लोग बडी हिम्मत, सब्र और धीरज से तमाम कठिनाइया झेल रहे थे और रेल का बाध हर रोज जगल की ओर बढता जा रहा था। रेलवे लाईन पर काम करना बराबर बढती जा रही कठिनाइयो के खिलाफ एक अविराम सघर्ष था।

पावेल कोर्चागिन ने जोर लगाकर चिपचिपे कीचड मे से अपना पैर खीच कर निकाला। उसे अपने पैरो मे जोर की सर्दी मालूम हुई। उसके जूते का घिसा हुआ तल्ला अलग हो गया था। जब पावेल यहा काम पर आया था, उसे अपने फटे जूते के कारण सख्त तकलीफ होती थी। वे कभी सूखते न थे और उनमे कीचड भर जाती थी। जब वह चलता था तो कीचड पिच्च पिच्च करती थी। अब उसका तल्ला बिलकुल चला गया था। बर्फ की तरह ठडा कीचड उसके नगे पैरो को जैसे छुरी से काटता जान पडता था। और इस तरह वह कैसे काम कर सकता था?

उसकी इस समस्या को लाइनमैन की बीवी ओदार्का ने, जो रसोइये के सहायक के रूप मे काम करती थी सुलझा दिया। उसने उसे अपने पति के बरसाती बूट लाकर दिये और उन्हें पहनते हुए पावेल ने उसकी ओर कृतज्ञ भाव से देखा।

तोकारेव गुस्से से उबलता हुआ शहर से लौटा था। शहर मे उसे बताया गया था बहुत-सी अडचनो के कारण नये लोगो की टोली बोयार्का अभी नही पहुच सकती। लिहाजा पुरानी टोली को जो पहले से वहा काम कर रही थी, पन्द्रह दिन और काम करना होगा। उसने आगे बढे हुए कम्यु-

निस्टो की एक मीटिंग सोलिम्रावा की कोठरी म बुलाई और उन्हें यह बुरी खबर सुनाई। वह बोला 'पाला गिरना शुरू होने ही वाला है और उसके पहले चाहे जैसे हो हमे दलदल के पार हो जाना है। क्योंकि जमीन जब बफ से जम जायगी तो कुछ करते धरते न बनेगा। लिहाजा हमको अपने काम की रफ्तार दुगनी कर दनी चाहिए। वह लाइन हमे बनानी ही है और उसे हम बनाकर रहेंगे,चाहे हम मर ही क्या न जायें। अगर हम एसा नहीं कर सकते तो हम बोल्शेविक नहीं, मिट्टी के लांदे होगे"

यह कहकर उसने चार पर्त किया हुआ एक कागज पांक्रातोव के हाथ म दिया। यह प्रादेशिक कमिटी का फैसला था। कधे के ऊपर से उस कागज को देसते हुए पावल ने पढा

परिस्थिति की गभीरता को देखते हुए कामसोमोल के सारे सदस्य अपने काम पर जमे रहेंगे और उन्हे तब तक छुट्टी नहीं मिलेगी जब तक कि इंधन का पहला चालान आ नहीं जाता। दस्तखत—रिता उस्तिनोविच प्रादेशिक कमिटी के मत्री की ओर से।

रसोई की बारक म भीड लगी हुई थी। पांक्रातोव ने मीटिंग की कार्रवाई शुरू की। अपनी छोटी सी तकरीर के साथ तोकारेव ने जब यह एलान किया कम्युनिस्ट और कामसोमोल वाले काम नहीं छोडेंगे' तो सुननेवालो पर जैसे बम गिरा। कुछ आवाजो का एक शोर उठा जिसमे थोडी देर के लिए सभी कुछ डूब गया। वे लोग अपने घर लौटना चाहते थे। उनका कहना था कि हम रोकने की बात क्या की जा रही है। हम जितना कर सकते थे हमने किया। कुछ ने गालियो म इस खबर का गुन लिया। और सिर्फ एक आदमी ने काम छोडकर भाग जाने की बात कही।

मुह से गालियां निकालते हुए एक आदमी अपने कोने म से जोर से चिल्लाया जहन्नुम म जाय यह काम! मैं तो यहां अब एक दिन भी नहीं ठहर सकता। हां कोई जुम किया हो तो कडी मशक्कत की सजा दीजिए। मगर हमने कौन-सा जुर्म किया है? अब और ठहरना बेवकूफी होगी। हमने दो हफ्ते तक काम किया और यह काफी है। अब उन लोगों से कहिए जिन्होंने यह फैसला किया है कि वे अपने कमरों से निकल कर खुद यहां आयें और काम करें। हो सकता है कि कुछ लोगों को इस गन्दगी और

कीचड म ही मजा आता हो। मगर भाई मेरे पास तो जीने के लिए सिर्फ एक जिन्दगी है, मैं कल जा रहा हू।" यह सब कहने वाला साथ कमिसारियर के एक क्लर्क का बेटा था।

पात्रातोव उठा और अच्छी तरह तनते हुए बोला

'यह किस किस्म की बात है? कौन है जो पार्टी के काम की तुलना जेल की कड़ी मशक्कत से कर रहा है?" उसन गरजते हुए और सामने की कतार म बैठे लोगो पर एक कठोर दृष्टि डालते हुए कहा।"

'नही साथियो, हम शहर नहीं जा सकते हमारी जगह यही है। अगर हम तुम दबाकर यहा से चले गय, तो हमारे भाई ठिठुर कर मर जायेंगे। जितनी जल्दी हम अपना काम खत्म कर लेंगे, उतनी ही जल्दी हम अपने घर पहुच सकते हैं। वहा वह पीछे बैठा हुआ भौंकने वाला जिस तरह भाग जाने की बात कर रहा है, यह चीज हमारे विचारो या अनुशासन स मेल नही खाती।"

पात्रातोव जहाज पर काम करनेवाला आदमी था। उस लम्बा भाषण देना अच्छा नही लगता था। मगर उसकी छोटी-सी तकरीर को भी उसी तरह खाई हुई आवाज ने बीच मे टोका।

'गर पार्टी लोग तो जा सकते हैं न।"

'हा।"

छोटा ओवरकोट पहने एक लडका रास्ता बनाता सामने आया। कामसोमोल की सदस्यता का एक कार्ड चमगादड की तरह उडता हुआ जाकर पात्रातोव के सीने से टकराया मेज पर गिरा और सीधा खडा हो गया।

यह रहा, अपना कार्ड रख लीजिए। मैं दफ्ती के इस टुकडे के लिए अपनी सेहत खतरे म नही डाल सकता।"

उसके आखिरी शब्द कुछ स्वरो के गर्जन म डूब गए

'कुछ सबर है क्या चीज तुम फेंक रहे हो।'

गद्दार दोगला।'

कोमसामोल में यह समझकर आया था कि यहा पद बटते है?'

उठा के फेंक दो बाहर साले को।"

जरा मुझे तो पहुचने दो इस गीदड के पास !

वह भगोड़ा सिर झुकाये दरवाजे की ओर बढ़ा। उन्होंने उसे निकल जाने दिया और जैसे उसमे अपना दामन बचा रहे हो, गोया वह कोढ़ी हो।

पाग्रातोव ने फेंके हुए मेम्बरी के कार्ड को उठाया और जल रहे दीए की लौ से लगा दिया। दफ्ती ने आग पकड ली और एठ ऐंठ कर जलने लगी।

दोपहर को जब शौर्याग्नि की टीम जोर शोर से काम कर रही थी, तब एक अप्रत्याशित बाधा उपस्थित हुई। वह सतरी जो राइफिला पर पहरा दे रहा था उसने दरख्तो के बीच से कुछ घुड़सवारो का आते देखा और चेतावनी देने के लिए एक गोली छोडी।

दोस्तो हथियार उठा लो लुटेरे ! पावेल चिल्लाया उसने अपना फावडा फेंक दिया और पड की ओर दौड़ा जहा उसकी माउजर लटक रही थी।

झटपट अपनी राइफिलें उठाकर दूसरे भी लाइन के किनारे बर्फ पर लेट गये आगे आगे चलने वाले घुड़सवारो ने अपनी टोपिया हिलाई।

उनमे से एक चिल्लाया साथियो रुको गोली मत चलाओ।

बुदोनी की फौज की टोपिया लगाये करीब पचास घुडसवार चले आ रहे थे। उनकी टोपियो पर लाल तारे चमक रहे थे। पुजीरेस्की की रेजिमेन्ट की एक टुकड़ी देख भाल के लिए आई थी।

बर्फ का तूफान अचानक उन पर टूट पडा। धुने हुए रुई जैसे बादल आसमान भर मे फैल गये और हर-हर-सी बर्फ गिरने लगी। सारी रात तूफान तेजी से चलता रहा। अंगीठिया सुलगी रही तब भी लोग कांपते रहे। स्टेशन का वह टूटी हुई इमारत अन्दर की गरमी को बरकरार नहीं रख पाती थी।

सबेरे पावल और उसके साथी अपने हिस्से मे गिरी हुई बर्फ की सफाई करने गए। तभी पावल को पता चला कि सर्दी कितनी तकलीफ देह चीज हो सकती है। पाकुोव की दी हुई जाकेट तार-तार हो गई थी। उससे किसी तरह भी सर्दी से बचाव नहीं होता था। उसका रबड़

वे बड़ जूतो मे हर समय बर्फ भरी रहती थी। उसकी गर्दन म दो बड़-बड़ फोडे निकल आये थे। ठण्ड पर सान के कारण एसा हुआ था। गुल-बन्द की जगह लगाने के लिए तोकारव न उसको अपना तौलिया द दिया था।

पावल का चेहरा मस्त और आखें लाल हो रही थी और वह मृत की तरह बर्फ मे अपना बेलचा चला रहा था। तभी एक मुसाफिर-गाडी भक भक करती हुई धीरे धीरे स्टेशन म दाखिल हुई। उसके इजन की जान अब-तब हो रही थी। बड़ी मुश्किल मे वह गाडी को यहा तक खीच कर ला सका था। उसके पास ईधन के लिए एक कुदा भी नही था और फायर बाक्स मे आखिरी अगार बुझने की तैयारी म थे।

इजन ड्राईवर न स्टेशन मास्टर स ईधन मागा तो उसन उसे तोकारेव से बात करने के लिए कहा। तोकारव के पास बात करने गाडी क कन्डक्टर गए तो वह बोला मैं तुम्ह लकडी दगा मगर इसके लिए तुम्हें दाम देना पड़गा। इस वक्त बर्फ के कारण हमारा काम रुका पडा है। तुम्हारी गाडी मे करीब छ सात सौ मुसाफिर जरूर होगे। औरतें और बच्चे गाडी मे रह जाय। मर्द बाहर आकर नाम तक बर्फ हटान मे हमारी मदद करें, यही हमारा कहना है। यह दाम चुकान के लिए यदि तैयार हो तो मैं तुम्ह लकडी दे सकता हू। अगर यह बात उन लोगो को मजूर न हो तो ठीक है, नये साल के पहल दिन तक वे आराम स उसी जगह पर पड रह सकते हैं।

'जरा इस भीड को तो दखो जा इधर आ रही है। अरे इनमे तो औरतें भी है!' पावेल ने अपनी पीठ के पीछे आश्चर्य म डूबी यह बात सुनी। वह पीछे मुड़ा। तोकारेव वहा पहुचा। उसन कहा "... तुम्हारे लिए एक सौ मददगार लाया हू। इन सबको काम दो और कोई काम चोरी न करने पाय।

कोर्चागिन ने इन नये आने वालो को काम की ठाठदार साफ-सुथरी वर्दी पहने एक लम्बे को घुमाया और एक नौजवान औरत की थी। वह औरत सील मछली के चमड का हैट

"मैं इस तरह फावडा मार मार कर बक नही फेंकूगा और किसी की मजाल नही जो मुझे इस काम के लिए मजबूर करे। रेलवे इंजिनीयर की हैसियत से मैं इस काम का चाज ले सकता था अगर मुझे कहा जाता। यह बुड्ढा आदमी कानून तोड रहा है। मैं चाह ता उसका चालान करवा सकता हू। तुम्हारा फारमैन कहा है?' उसन अपने पास म इ रन मजदूर से आदेश के स्वर म पूछा।

कोर्चागिन वहा आ गया।

' आप काम क्या नही कर रह है महाशय?'

मगर आप कौन हैं?

' मैं एक मजदूर ह।'

तब मुझे आपस कुछ नहीं कहना है। मेरे पास अपने फारमन को भेज दीजिए ।

पावेल के माथे पर बल पड गये।

"अगर आप काम नही करना चाहते तो मत करिये। मगर आप वापस अपनी गाडी म नहीं पहुच सकते जब तक कि आपने टिकट पर हमारे दस्तखत न हो। यह हमारे प्रधान का आदेश है।'

और आप? पावेल ने उस औरत की तरफ मुडते हुए कहा और उस ओर नजर पडते ही जैसे उसे काठ-सा मार गया। उसके सामने तानिया तुमानोवा खडी थी। उसके हाथ म चाकी की थी और अपने पति के साथ शहर जा रही थी। भला किसने सोचा था कि अपने कनोरे का प्रेम पात्र उसे यहा इस रूप म मिल जायगा। उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढाने म भी उसे झिझक हुई।

वह हिचकिचाती हुई खडी रही। उसके गाल जल रहे थे। इसी बीच रेलवे इंजीनियर ने जो इस आवारा की ढिठाई पर तैश खाता खडा था क्योंकि वह उसकी बीवी का घर रहा था अपने हाथ का बनवा फेंक दिया और अपना नया की बगल म जाकर खडा हो गया।

पना तानिया पर्ने, मैं स्मला गुरानी (नगर शहर का रहने वाला आवारागर्द सब्बा जो छोटे मोटे काम करके और भीख माग कर जीवन निर्वाह करता था।) की गरत अब और नहीं बर्दाश्त कर सकता।

पावेल ने गैरीवाल्डी पढा था और इस शब्द का मतलब समझता था।

"मैं भले लात्सरोनी होऊं, मगर तुम तो एक गलीज बुजग्रा हो" उसने फटी हुई आवाज मे कहा और फिर तोनिया की तरफ मुड़ते हुए रुखे अन्दाज मे कहा कामरेड तुमानोवा, बेलचा ले लो और काम शुरू कर दो इस बैल के उदाहरण पर मत चलो माफ करना अगर तुम्हारा इससे किसी तरह का सम्बन्ध हो।'

पावेल ने तोनिया के फर के जूतो पर निगाह डाली और मुस्कराते हुये बोला 'मैं तुम्हे यहा रुकने की सलाह न दूगा। कल रात लुटराने हम पर हमला किया था।

यह कह कर वह घूमा और चल पडा, उसके रबड के बड़ जूते फटा फट बज रहे थे।

उसके आखिरी शब्दो का रेलवे इंजीनियर पर असर हुआ और तानिया ने उसे रुकने और काम करने के लिए राजी कर लिया।

एक रोज पावेल काम पर से स्टेशन लौटते हुए शराबी की तरह लडखड़ाता चला जा रहा था। उसकी टागें टूटी जा रही थीं। कई रोज से उसे हरारत-सी रहती थी मगर आज बुखार की तेजी बढ गई थी। टाइफाइड बुखार काम करने वालो की संख्या बराबर घटाता जा रहा था और अब उसे यह एक नया शिकार मिला था।

हर कदम के साथ पावेल के सीने मे बडा तेज दर्द होता था। उसके दात बज रहे थे। उसकी आखो के आगे धुधलका छाया हुआ था जिससे उसे तमाम पड घूमते नजर आ रहे थे।

बडी मुश्किल से वह किसी तरह अपने पैरो को घसीटता हुआ स्टेशन पहुचा। तब उसके पावो ने भी उसका साथ छोड दिया और वह लहरा कर गिर पडा। लोग उसे उठाकर बारक में ले आये। बख्तरबन्द गाडी में से एक कम्पाउडर को बुलाया गया जिसने बताया कि पावेल को टाइफाइड और निमोनिया है। उसे एक सौ छ डिग्री बुखार था।

पान्क्रातोव और दुबावा ने जो शहर से आये थे, पावेल को बचाने के लिए कोई भी कसर उठा न रखी। उन्होने अन्य साथियो की मदद से

"मैं इस तरह फावडा मार मार कर बर्फ नही फेंकूगा और किसी की मजाल नही जो मुझे इस काम के लिए मजबूर कर। रेलवे इजिनीयर की हैसियत से मैं इस काम का चाज ले सकता था अगर मुझे कहा जाता। वह बुड्ढा आदमी कानून तोड रहा है। मैं चाहू तो उसका चालान करवा सकता हू। तुम्हारा फोरमैन कहा है? उसने अपने पास खडे एक मजदूर से आदेश के स्वर म पूछा।

कोचाग्नि वहा आ गया।

आप काम क्यो नही कर रहे हैं महाशय?

'मगर आप कौन है?'

मैं एक मजदूर हू।'

'तब मुझे आपसे कुछ नही कहना है। मेरे पास अपने फोरमैन को भेज दीजिए।

पावेल के माथे पर बल पड गये।

'अगर आप काम नही करना चाहते तो मत करिये। मगर आप वापस अपनी गाडी म नही पहुच सकते जब तक कि आपके टिकट पर हमारे दस्तखत न हो। यह हमारे प्रधान का आदेश है।

और आप? पावेल ने उस औरत की तरफ मुडते हुए कहा और उस ओर नजर पडते ही जैसे उसे काठ सा मार गया। उसके सामने तानिया तुमानोवा खडी थी। उसने हाल म शादी की थी और अपने पति के साथ शहर जा रही थी। भला किसने सोचा था कि अपने कैशोर्य का प्रेम पात्र उसे यहा इस रूप म मिल जायेगा! उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढाने म भी उसे झिझक हुई।

वह हिचकिचाती हुई खडी रही। उसके गाल जल रहे थे। इसी बीच रेलवे इजीनियर ने, जो इस आवारे की ढिठाई पर तैश खाता खडा था क्योकि वह उसकी बीवी को घूर रहा था अपने हाथ का बेलचा फेंक दिया और अपनी बीवी की बगल म जाकर खडा हो गया।

चलो तानिया चलें, मैं इस लात्सरोनी (नेपल्स शहर का रहने वाला आवारागर्द लडका जो छोटे मोटे काम करके और भीख माग कर जीवन निर्वाह करता था।) की सूरत अब और नही बर्दाश्त कर सकता।

पावेल ने गैरीबाल्डी पढा था और इस शब्द का मतलब समझता था।

'मैं भले लात्सरोनी होऊ, मगर तुम तो एक गलीज बुजआ हो," उसने फटी हुई आवाज मे कहा और फिर तोनिया की तरफ मुडते हुए रूखे अदाज मे कहा कामरेड तुमानोवा बेलचा ले लो और काम शुरू कर दो इस बैल के उदाहरण पर मत चलो माफ करना अगर तुम्हारा इससे किसी तरह का सम्बन्ध हो।'

पावेल ने तोनिया के फर के जूतो पर निगाह डाली और मुस्कराते हुये बोला, 'मै तुम्हे यहा रुकने की सलाह न दूगा। कल रात लुटरान हम पर हमला किया था।'

यह कह कर वह घूमा और चल पडा उसके रबड के बड जूते फटा फट बज रहे थे।

उसके आखिरी शब्दो का रेलवे इजीनियर पर असर हुआ और तोनिया ने उसे रुकने और काम करने के लिए राजी कर लिया।

एक रोज पावेल काम पर से स्टेशन लौटते हुए शराबी की तरह लडखडाता चला जा रहा था। उसकी टागे टूटी जा रही थी। कई गज से उसे हरारत-सी रहती थी मगर आज बुखार की तेजी बढ गई थी। टाइफाइड बुखार काम करने वालो की सख्या बराबर घटाता जा रहा था और अब उसे यह एक नया शिकार मिला था।

हर कदम के साथ पावेल के सीने मे बडा तेज दर्द होता था। उसके दात बज रहे थे। उसकी आखो के आगे धुधलका छाया हुआ था जिससे उसे तमाम पेड घूमते नजर आ रहे थे।

बडी मुश्किल से वह किसी तरह अपने पैरो को घसीटता हुआ स्टेशन पहुचा। तब उसके पावो ने भी उसका साथ छोड दिया और वह लहरा कर गिर पडा। लोग उसे उठाकर बारक मे ले आये। बख्तरबन्द गाडी मे से एक कम्पाउडर को बुलाया गया जिसने बताया कि पावेल को टाइफाइड और निमोनिया है। उसे एक सौ छ डिग्री बुखार था।

पाक्रातोव और दुबावा ने, जो शहर से आये थे, पावेल को बचाने के लिए कोई भी कसर उठा न रखी। उन्होने अन्य साथियो की मदद से

ब्रहोन कोर्चागिन और अल्योशा को ठसाठस भरे हुए रेलगाडी के डिब्बे मे घुसाया। रास्ते मे कोई तग न करे इस बात को ध्यान मे रख अल्योशा को पावेल का माउजर दे दिया गया और कहा गया कि अगर कोई आदमी गडबड करे तो उसे गोली से उडा दो।

रेलगाडी भक भक भाप छोडती हुई स्टेशन से रवाना हुई। पाक्रातोव दुबावा के पास गया जो वीरान प्लटफाम पर खडा था।

तुम्हारा क्या ख्याल है वह बच जायगा ?

सवाल का कोई जवाब नही मिला।

मगर जवानी की जीत हुई। टाइफाइड पावल का काम तमाम नही कर सका। चौथी बार उसने मौत की सरहद पार की और जिन्दगी को लौट आया। मगर बिस्तर से उठने मे उसे पूरा एक महीना लग गया। वह बिलकुल पीला और ककाल की तरह हड्ड हड्डी हो गया था।

वसन्त के उभार पर आते आते पावल वापस शहर जाने की बात सोचने लगा। अब उसमे चलने फिरने लायक ताकत आ गई थी। मगर अज्ञात बीमारी उसे घुन की तरह खाय जा रही थी। एक दिन जब वह बगीचे म घूम रहा था तो उसकी रीढ की हड्डी म एसा भयानक दर्द उठा कि उसके लिए खडा रहना कठिन हो गया।

दूसर रोज उसकी पूरी डाक्टरी जाच हुई। उसकी पीठ की जाच करने पर डाक्टर को उसकी रीढ की हड्डी मे एक गहरा गड्ढा मिला।

यह घाव तुम्हे कहा लगा ? डाक्टर ने पूछा।

'रोवनी की लडाई म। हमारे पीछे की एक बडी सडक को एक तीन इची तोप ने फोडकर रख दिया था। तभी एक पत्थर आकर मेरी पीठ मे लगा था।

मगर तुम चलते फिरते कैसे थे ? क्या इससे कभी तुम्हे कोई परेशानी नही हुई ?

नही। चोट लगने के एक दो घण्टे तक तो मैं नही उठ सका मगर फिर सब ठीक हो गया और मैं अपने घोडे पर सवार हो गया और मजे मे मेरा काम चलता रहा। तब म पहली बार मुझे यह तक्लीफ हुई है।'

उस गड्ढे की जाच करते वक्त डाक्टर का चेहरा बहुत गभीर हो

गया था।

'न भाई, यह बहुत बुरी चीज है। रीढ को इस तरह झकझोरा जाना उसे पसद नही। अच्छा हो कि यह कोई गडबडी न करे और मामला खैरियत से गुजर जाय।

डाक्टर ने अपने मरीज को कपड पहनते समय हमदर्दी और पीडा से देखा—पीडा जिसे छिपाना उसके बस मे न था।

इस विचार से पावेल को बहुत खुशी हो रही थी कि कल वह इस जगह को छोडकर बड शहर चला जायेगा। वहा उसके तमाम व दोस्त और साथी मिलेंगे जिन्हें वह बहुत प्यार करता है। ब शहर की जिन्दगी की हलचल आदमियो का अतहीन ताता उसकी ट्रामो और मोटर गाडियो की आवाजें अपनी इन सब चीजो सहित शहर उसे चुम्बक की तरह अपनी ओर खीचता था। मगर सबसे ज्यादा चाह उसके दिन मे कारखान की उन बडी-बडी ईंट की इमारतो की थी—कालिख से भरी हुई वकशाप, मशीनें ट्रासमिशन बेल्टो की धीमी गूज। उसके मन म दत्या कार पलाई व्हीलो को बेतहाशा घूमते देखन की, मशीन के तेल की गध सूघन की, तीव्र लालसा थी। ये सारी चीजें उसके व्यक्तित्व का अ ग बन चुकी थी। इसलिए स्वभावत उस इन चीजो की तलाश रहती थी यह छोटा सा खामोश सा कस्बा जिसकी सडकों पर वह इस वक्त घूम रहा था उसके मन को एक अजीब ढग स उदास कर दता था।

अपने विचारो म डूबा हुआ बखबर सा वह चीड के जगलो म पहुच गया और दोराहे पर थोडी देर के लिए खडा हो गया। उसके दाहिन हाथ पर वह पुराना जेलखाना था जिस एक ऊची-सी लोहे के नुकीले डण्डे निकला हुई चारदीवारी जगल से अलग करती थी।

यही वह जगह थी जहा जल्लाद के फद ने वालिया और साथियो की जिंदगी का गला घाट दिया था। पावेल खामोश खडा रहा जहाँ पर फासी की टिकटी रह चुकी और चढाई तक गया और उतर कर उस छोटे स कब्रि क्राति के दुश्मनो के आतकराज के शिकार अपनी पड हुए थे।

इसी जगह पर पावेल के साथियो ने बहादुरी के साथ मौत का सामना किया था ताकि गरीबी मे पैदा हुये लोगो की जिन्दगी खूबसूरत हो सके, उन लोगो की जिन्दगी जिनकी गुलामी पैदाइश के रोज से ही शुरू हो जाती थी।

पावेल ने धीरे धीरे अपना हाथ उठाया और टोपी उतार ली। एक गहरी उदासी उसके भीतर बाहर व्याप गई।

आदमी की सबसे बडी दौलत उसकी जिन्दगी होती है। और जीने के लिए आदमी को बस एक ही जिन्दगी मिलती है। उसे अपनी जिन्दगी इस तरह जीनी चाहिए ताकि बाद मे यह सोचकर उसे दुखी न होना पडे कि उसने अपनी जिन्दगी के कीमती साल यो ही गुजार दिए है ताकि उसे इस जिल्लत की आग मे न जलना पडे कि उसका बीता हुआ युग घृणित व ओछा था। उसे इस तरह जीना चाहिए ताकि मरते वक्त वह कह सके कि मैंने अपनी सारी जिन्दगी अपनी सारी शक्ति ससार के पवित्रतम काम मे लगाई है—मानव जाति की आजादी की लडाई मे लगाई है। और आदमी को अपनी जिन्दगी के एक एक पल का इस्तेमाल करना चाहिए क्योकि कौन जाने कब कोई अकस्मात् बीमारी या करुण दुघटना बीच मे ही उसकी जिन्दगी का तार तोड दे।

यही बातें सोचता-सोचता कोर्चागिन मुडकर कब्रिस्तान से चल दिया।

पावेल अकेला ही स्टेशन गया।

उसने अपनी मा को घर पर ही रुकने के लिए राजी कर लिया था। वह जानता था कि स्टेशन पर की विदाई उसके लिए असह्य हो जायगी।

कीव पहुच कर वह फिर से अपने साथियो मे शामिल हो गया। साथियो ने सुखद आश्चर्य के साथ उसका हार्दिक स्वागत किया। क्योकि वह पावेल को मृत समझ चुके थे।

कामसोमोल सदस्य सूची मे वह फिर से जिन्दा हो गया और रेलवे के कारखाने मे काम पर जुट गया।

और इस प्रकार वह फिर से जीवन सघर्ष मे कूद पडा। कुछ समय पश्चात उसे रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का सदस्य बना लिया

गया।

●●

गेपतावका स्टेशन के तार घर मे तीन आले (यत्र) लगातार खटखटा रहे थ। मगर उनकी भाषा ऐसी थी जो सिर्फ जानकार आदमी ही समझ सकता था।

आपरेटर लडकिया अभी जवान थी, मगर अभी उन्होने बीस किलो-मीटर से ज्यादा फीता न टपटपाया होगा जबकि उनके बगल का बुड्ढा तार बाबू दो सौ किलामीटर से अधिक कर चुका था। अपने नौजवान साथियो की तरह उस बुडढ तार बाबू को तार से भेजा गया सन्देश समझने के लिए उस फीते को पढना नही पडता था। न वह मुश्किल शब्दो और वाक्याशो की पहेली मे उलझता था और न उसके माथे पर गहरी सोच के कारण बल ही पडते थे। उसका ढग यह था कि शब्द पढता जाता था और मशीन टपटपाता जा रहा था। तभी उसके कान मे शब्द पड, "सबके लिए सबके लिए, सबके लिए!'

बफ साफ करने के बारे मे कोई दूसरा सरकुलर होगा" बुड्ढे तार बाबू ने उन शब्दा को लिखते हुए मन मे सोचा। बाहर बफ का तूफान जोरा से चल रहा था। सख्त बफ आकर खिडकी स टकराती थी। तार बाबू ने सोचा कि कोई खिडकी पर दस्तक दे रहा है। उसन आवाज की ओर दखा और पल भर के लिए बफ द्वारा खिडकी के शीशे पर बन गइ आकृतिया पर उसकी नजर ठहर गई।

थोडी देर बाद छूट गये शब्दो को पढन के लिए उसने फीते की तरफ हाथ बढाया। तार की मशीन ने ये शब्द लिखे थे

२१ जनवरी की शाम को छ बजकर पचास मिनट पर "

तार बाबू ने जल्दी जल्दी ये शब्द लिखे, फीते को नीचे रख दिया और अपन सिर को हाथ पर टिकाकर आगे की बात सुनने लगा।

कल गोर्की की मृत्यु हो गई " धीरे धीरे उसने ये शब्द कागज पर उतार दिए। अपनी लम्बी जिन्दगी मे उसने न जाने कितने सदेश लिखे थे खुशी के सदेश और गम के सदेश, कितनी बार दूसरो के दद और की खबर उसीन सबसे पहले सुनी थी। अपने काम के सिलसिले में

न जाने कब से इस प्रकार के छोटे सदशा के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ दिया था। उसका तो काम बस इतना था कि ध्वनियों को पकड़ और मशीन की तरह उनको कागज पर उतार द।

यह भी किसी की मौत की खबर थी और किसी को इसकी सूचना दी जा रही थी। तार बाबू को शुरू के वे शब्द 'सबके लिए, सबके लिए सबके लिए" भूल गये थे। मशीन ने टिक टिक करके 'व्लादीमीर इलिच" लिखा और तार बाबू ने उनको अक्षरो में उतार दिया। उस पर कोई असर नही हुआ, बस थोडी सी थकान मालूम हुई। व्लादीमीर इलिच नाम का आदमी कही मर गया था, मगर उसको इससे क्या ? मशीन डेश डाट डाट बोलती जा रही थी। अपनी उस सुपरिचित ध्वनि मे से तार बाबू ने पहला अक्षर पकड़ा और उस तार के फाम पर लिखा। यह अंग्रेजी का 'एल' था। फिर दूसरा अक्षर था ई' । उसके बाद ही उसने लिखा एन , फिर जल्दी ही जोडा "आई , फिर आखिरी अक्षर लिखा "एन ।

इसके बाद मशीन ने विराम दिया और क्षण भर के लिए तार बाबू की आख अपने लिखे हुए शब्द लेनिन पर ठहर गई।

मशीन टपटपाती रही मगर अब वह परिचित नाम तार बाबू की चेतना मे दाखिल हुआ। उसने एक बार फिर उस सदेश के आखिरी शब्द पर निगाह डाली ' लेनिन । क्या ' लेनिन ? तार की सारी इबारत उसके मन मे बिजली की तरह कौंध गई। वह तार के फाम को घूरता हुआ बैठा रहा। अपने काम की बत्तीस बरस की जिन्दगी म पहली बार वह अपने लिखे हुए शब्दा पर विश्वास नही कर सका।

उसने तीन बार उस लाइन पर जल्दी जल्दी निगाह दौडाई मगर व शब्द जरा भर भी नही बदले 'व्लादीमीर लेनिन की मृत्यु हो गई।

इस भयानक मृत्यु की खबर तार घर के खुले हुए दरवाजे म स निकली और आधी की तरह स्टेशन म फैल गई। तूफान के डैनो पर सवार होकर रेल की पटरियो और स्विचा से जा टकराई बर्फ के तूफान के साथ साथ रेलवे वर्कशाप के बर्फ स ढके हुए फाटको को चीरती हुई अन्दर घुस गई।

मरम्मत करने वाले कुछ मजदूर पहले स ही पिट पर खडे हुए एक इजन की मरम्मत कर रहे थे। बूढा पोलेन्तोव्स्की खुद अपने इजन के

नीचे घुस कर उन जगहो को बतला रहा था जिनमे गडबडी थी। जख्बार' ग्रुजाव और मार्तेम मातिशदान की मुडी हुई लोहे की सलाखो को सीधा कर रहे थे। जखार उसको निहाई पर रखे हुए था और मातम हथौडा चला रहा था'

दरवाजे म खडे हुए किसी व्यक्ति की आकृति क्षण भर के लिए दिखाई दी और फिर रात का अधेरा उसको निगल गया। लोहे पर हथौडो की चोटो ने उसकी पहली चीख को डुबा दिया मगर जब वह इजन पर काम कर रहे व्यक्तियो के पास पहुचा तो मार्तेम के हाथ का हथौडा उठा-का उठा रह गया।

'साथियो। लनिन मर गय।''

हथौडा धीरे धीरे मार्तेम के कन्धे मे नीचे आ गया और उसके हाथो ने खामोशी म उसको नीचे फश पर रख दिया।

क्या हुआ? तुमने क्या कहा? कहते हुए मार्तेम ने यह भयानक खबर लाने वाले आदमी की चमडे की जाकट को पागल की तरह झटके से पकड लिया।

और उसने हाफते हुए बर्फ स ढके हुये अपनी धीमी, टूटी हुई आवाज मे दोहराया हा साथियो, लनिन मर गये।'

यह भयानक खबर लाने वाला आदमी स्थानीय पार्टी सगठन का मत्री था। अत अविश्वास की गुजाइश नही थी।

इजन की मरम्मत करने वाले मजदूर पिट म से कूद कर बाहर आये और उन्होने मौन होकर उस आदमी की मौत की खबर सुनी जिसका नाम सारी दुनिया म गूज रहा था।

फाटक के बाहर कही एक इजन सीटी दे रहा था जिसे सुनकर वे लोग काप गये। इजन की इस दर्द मे डूबी हुई आवाज के बाद वैसी आवाज दूर पर एक और इजन ने की उसके बाद एक और। ८ इस आवाज म बिजलीघर के साइरेन ने अपनी ... रेन की आवाज बुलन्द और बम के उडते हुए ... चुभने वाली थी। फिर ये आवाजें जरा देर बाद ... होने वाली मुसाफिर-गाडी के खूबसूरत एस'

हुई आवाज मे डूब गई।

खुफिया का आदमी चौंक गया जब शेपेतोवकावार्सा एक्सप्रेस के पोलिश इजन के ड्राईवरो ने इजनो की इन सीटियो का कारण जानने पर, कान लगाकर उसको सुना और फिर धीरे धीरे अपना हाथ उठा कर सीटी की रस्सी को खीचा। वह जानता था कि यह आखिरी बार उसको ऐसा करने का मौका मिल रहा है इसके बाद उसे फिर कभी यह गाडी चलाने को न मिलेगी। मगर उसके हाथ न सीटी की रस्सी को न छोडा और उसके इजन की चीख ने पोलिश दूता और कूटनीतिज्ञो को चौंका कर उन्हे अपने नरम कोचो से उठा दिया।

रेलवे के हाते मे लोगो की भीड जमा थी। शोक-सभा निस्तब्ध शाति के वातावरण मे शुरू हुई। पार्टी की शेपेतोवका एरिया कमेटी के मत्री, पुराने बोल्शेविक सराब्रिन ने तकरीर की।

'साथियो! लेनिन दुनिया भर के मजदूरो के नेता लेनिन मर गये। पार्टी की अपूर्णीय क्षति हुई है क्योकि वह आदमी उठ गया जिसने बोल्शेविक पार्टी का निर्माण किया और उसको दुश्मनो के प्रति निर्मम होना सिखाया हमारी पार्टी और हमारे वर्ग के नेता की मृत्यु मजदूर वर्ग की सर्वोत्तम सन्तानो के लिए एक पुकार है कि वे आकर हमारी पार्टी मे शामिल हो।'

शोक संगीत की धुनें गूज उठी। वहा पर उपस्थित उन सैकडो लोगो ने अपनी टोपिया उतार ली और वह आर्तेम जो पन्द्रह बरस से नही रोया था, उसको लगा कि जैसे दर्द से उसका गला घुट रहा है और उसके वे मजबूत, चौडे कन्धे सिसकियो के कारण हिल उठे है।

रेलवे मजदूरो के क्लब के हाल मे छ सौ लोग जमा थे। वे यहा पार्टी द्वारा बुलाई शोक-सभा मे शरीक हुये थे।

ब्यूरो के मेम्बरो ने शाति से मच पर आसन ग्रहण किया। मुख्य भाषण के बाद पार्टी सगठन का मत्री सिरोतेंको बोलने के लिए उठा और यद्यपि उसने जो घोषणा की वह शोक सभा के लिए कुछ अपवाद ही थी, मगर किसी को उसमे आश्चर्य नही हुआ।

उसने कहा, 'कई मजदूरो ने इस सभा से माग की है कि वह पार्टी

मेम्बरी की अर्जी पर विचार करे। इस अर्जी पर सैंतीस साथियो के हस्ताक्षर हैं।' और उसने वह अर्जी पढकर सुनाई

दक्षिण पश्चिम रेलवे शेपेतोवका स्टेशन की बोल्शेविक पार्टी के रेलवे सगठन की सेवा मे।

"हमारे नेता की मृत्यु हमारे लिए पुकार हैं कि हम बोल्शेविक पार्टी मे शामिल हो। और हम इस सभा से अनुरोध करते हैं कि वह इस बात पर विचार करे कि हम लेनिन की पार्टी के सदस्य होने के योग्य हैं या नही।"

इस छोटे से वक्तव्य पर दो कालम भर कर हस्ताक्षर थे।

सिरोतिका ने उन्हें पढकर सुना दिया। प्रत्येक नाम पढने के बाद वह कुछ पलो के लिए रुक जाता ताकि सुनने वालो को वह नाम याद हो जाए।

"स्तनिस्लाव जिग्मदोविच पोलेताव्स्की, इजन ड्राइवर, छत्तीस वर्ष की सर्विस।'

हाल मे सहमति की आवाजें गूज उठी।

'आर्तेम आन्द्रीयेविच कोर्चागिन मिस्त्री, इक्कीस वर्ष की सर्विस।"

'जरवार फिलिप्पोविच ब्रूजाक, इजन ड्राइवर इक्कीस वर्ष की सर्विस।'

मच पर बठा वह व्यक्ति ज्यो ज्यो रेल मजदूरों के पुराने परखे हुए साथियो के नाम लेता जाता था, त्यो त्यों हाल मे समर्थन का शोर बढता जाता था।

लेनिन की मौत ने लाखो मजदूरो को झकझोर कर जगाया, उन्हें बोल्शेविक बनाया। नेता के चले जाने पर भी पार्टी म कोई कमजोरी न आई। वह नयी शक्ति ग्रहण कर अपने कर्तव्य मे ज्यो की त्यो जुटी रही। जिस पेड की जडें मजबूती के साथ जमीन मे गाडी होती हैं उसके ऊपर को यदि काट भी दिया जाए, तो भी वह मरता नही।

दो वर्ष बीत गये। वक्त की निश्चित गति के कारण दिन, सप्ताह व महीने बीतते जा रहे थे। सोलह करोड लोगो का यह महान् देश, अपने भविष्य की बागडोर पहली बार अपने हाथो मे सभालने वाली जनता

का यह विशाल धनी देश, उसकी युद्ध के कारण बिखर गई अर्थ-व्यवस्था को फिर से व्यवस्थित करने के कठिन काम में वह जनता जी जान से जुट गई थी।

काम में लगातार जुटे रहने के कारण पावेल को मालूम ही नही हुआ कि कब दो साल बीत गये। वह एसा व्यक्ति न था जो जिन्दगी को आराम से गुजार देता है। उसके जीवन की गति बहुत तेज थी और वह न तो स्वय एक पल भी नष्ट करता और न ही किसी अन्य व्यक्ति को करने देता था।

वह बहुत कम सोया करता था। प्राय उसकी खिडकी म देर तक रोशनी रहती और बहुत रात गये तक उसके कमरे मे बहुत-से लोग एक मेज के इर्द-गिर्द बैठे पढते रहते। इन दो वर्षों मे उन्होने काल मार्क्स की महान रचना "कपिटल" के तीसरे खण्ड का बहुत गहराई से अध्ययन किया था और पूजीवादी शोषण की बारीक काय प्रणाली को उन्होंने अच्छी तरह समझ लिया था।

गर्मी आई और उसके साथ ही गर्मी की छुट्टिया।

पावेल के सग काम करने वाले लोग एक के बाद एक करके गर्मी की छुट्टिया बिताने जाते रहे और उनका सारा काम पावेल के पास आ गया। पावेल ने मुह से बिना एक शब्द भी निकाले उनके काम का बोझ अपने कधो पर उठा लिया। बीमार साथियो के स्वास्थ्य लाभ के लिए पावेल ने समुद्र किनारे सेनेटोरियम मे जगह और रुपया पैसा पाने मे मदद भी की। पूरी गर्मियो मे दफ्तर मे काम करने वालो की कमी रही। लेकिन उससे जिन्दगी की तीव्रगति मे कोई बाधा न आई और न ही एक दिन के लिए पावेल ने काम छोडा।

गर्मी बीती। अब पतझड आयेगा और फिर उसके बाद जाडा इस विचार से ही पावेल को डर लगता था। क्योंकि जाड मे उसे सबसे अधिक तकलीफ होती थी। उस साल उसने खास दिलचस्पी स गर्मियो का इत जार किया था। उसका स्वास्थ्य लगातार गिरता जा रहा था—इस वह साफ तौर से महसूस कर रहा था। अब उसके सामने केवल दो रास्त थ या तो वह यह मान ले कि अब सख्त महनत करना उसके वश स बाहर

है और इस स्थिति का ऐलान कर दे या जब तक जान मे जान है तब तक अपनी चौकी पर मुस्तैदी से डटा रहे। उसने दूसरा रास्ता ही चुना।

एक दिन पार्टी की क्षेत्रीय कमेटी की ब्यूरो मीटिंग म डाक्टर बर्तेलिक, जो पार्टी के पुराने भूमिगत कार्यकर्ता थे और इन दिनों जन-स्वास्थ्य के इचार्ज थे पावल से बोले

बहुत कमजोर नजर आ रहे हो तुम कोर्चागिन ! तुम्हारा स्वास्थ्य कसा है ? मेडिकल बोर्ड ने तुम्हारी शारीरिक जाच की है ? नही ? मैं भी यही समझता था। लेकिन दोस्त, मेरा विचार है कि तुम्हें पूरी ओवरहालिंग का जरूरत है। बीरवार को आना, हम तुम्हारी जाच करेंगे।

मगर पावेल नही गया। उस बहुत-सा काम था। तब एक दिन डाक्टर बार्तेलिक स्वय उसे मेडिकल बोर्ड मे ले गए। बोर्ड ने उसकी जाच कर लिखा कि उसे तुरत छुट्टी दी जानी चाहिए ताकि वह क्रीमिया जाकर लम्बे समय तक अपना इलाज करा सके। वरना परिणाम बहुत भयकर होगा।

मेडिकल बोर्ड की सिफारिश पर अमल किया गया और जीवन मे पहली बार पावल छुट्टी लेकर यापेतारिया के सेनटोरियम के लिए रवाना हुआ। किंतु रवाना होने स पहले उसन जी जान से अपना काम निपटाने की पूरी कोशिश की।

वह एक छोटा, खूब रोशन वार्ड था। उसमे केवल एक चारपाई पड़ी थी। वह एक बहुत ही साफ सुथरा वार्ड था और उसमे अस्पताल की वह गध फैली हुई थी जिसे एक लम्बे समय स पावल भूला था। वह बिस्तर पर बैठा चिट्ठिया लिख रहा था कि धीरे स दरवाजा खोलकर एक युवती, जिसने सफेद कप- पहन रखे थे और सिर पर टोपी लगा रखी थी, उसके बिस्तर के करीब आई। उसके हाथो म एक चम का बैग, एक कागज और पैसिल थे। वह डाक्टर थी। बोली "मैं तुम्हारे वार्ड की डाक्टर हू। मैं तुमसे बहुत से सवाल पूछूगी। हो सकता है, वे तुम्हे बुरे लगें। फिर भी तुम्हे मुझे सब कुछ बताना होगा।' यह कहकर वह बहुत प्यारे ढग स मुस्कराई। उसकी वह मुस्कराहट देख पावेल के दिल से "बहस भय निकल गया और उसने खुशी खुशी उसके हर सवाल का

दिया बल्कि उसे अपने और पुरखों तक के बारे में बता दिया ।

कुछ ही दिनों में पावेल के घुटन, रीढ आदि का आपरेशन हुआ जिससे उसे बहुत तकलीफ हुई। बहुत खून निकल जाने के कारण वह बेहद कमजोरी महसूस करने लगा। आपरेशन के बाद बहुत दिनों तक वह दाहिने घुटने को हिला भी न सका। चल फिर सकने की तो बात ही क्या। इस असहाय स्थिति में उसने अपने बड़े भाई आर्तेम को पत्र लिखा जिसमें उसकी पारिवारिक परेशानियों पर अपना मत व्यक्त करते हुए अपनी वतमान स्थिति पर रोष व्यक्त किया। उसके लिए सबसे अधिक कष्टदायक बात यह थी कि वह अपनी फौज से कट गया था और उसमें वापस लौटने की संभावनाएं लगभग नहीं के बराबर थी।

क्रीमिया के लिए रवाना होने से पहले पावेल को डाक्टर बाजानोवा ने जो उसकी वहीं वार्ड डाक्टर थी अपने पिता मशहूर सर्जन को दिखाया। उस प्रसिद्ध सर्जन ने बहुत बारीकी से पावेल की जांच की और लैटिन भाषा में, जिसे पावेल नहीं समझता था अपनी डाक्टर बेटी को बताया कि पावेल के जिस्म में होने वाली घातक सूजन को रोक थाम दवाईयां अब तक नहीं कर सकी थी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि इस नौजवान को लकवे का खतरा है और इस दुखदायी खतरे को वे टाल नहीं सकते। यह सब सुनकर बाजानोवा का चेहरा फक हो गया। किंतु शीघ्र ही उसने अपने आप पर काबू पा लिया और इस प्रकार बहुत आग्रह करने पर भी पावेल उस दिन सच्ची बात न जान सका।

येपेतोरिया के माइनाक सेनेटोरियम में आराम करते हुए उसे लग भग महीना होने जा रहा था कि अंतिम कुछ दिनों में पावेल की हालत और खराब हो गई। डाक्टरों ने उसे हिलने डुलने से मना कर दिया और बिस्तर पर लेटे रहने का आदेश दिया। बाकी जितने रोज पावेल सेनेटो रियम में रहा, उसे बिस्तर पर ही लेटे रहना पड़ा। अपने इर्द गिर्द के लोगों से वह अपना कष्ट छिपा लिया करता था। जाने से करीब सात आठ दिन पहले उसे उक्रेन की केन्द्रीय कमेटी का पत्र मिला। उसमें लिखा था कि डाक्टरों की सलाह से उसकी छुट्टी दो महीने और बढ़ा दी गई है क्योंकि अभी वह काम करने योग्य नहीं है। पत्र के साथ ही खर्चे के लिए

पैसा आया था।

पावल के मन पर घूसा पडा। पर वह उसे उसी तरह सह गया जिस तरह वर्षों पहले उसने जुखराई का घूसा सहा था। उस समय भी वह गिर पडा, लेकिन तुरत उठ खडा होने के लिए।

एक सप्ताह पश्चात उसके सेनेटोरियम के मित्रो ने उसे जहाज के घाट पर जाकर प्रेमपूर्वक विदा किया।

पावेल विचारो मे खोया हुआ था। बचपन से लेकर आज तक का उसका सारा जीवन तेजी से उसकी आखो के सामने घूम गया। उसने अपनी चौबीस साल की जिन्दगी का ढग से बिताया या नही यह जानने के लिए उसने निष्पक्ष व गम्भीर होकर एक एक साल पर नजर डालनी शुरू की। और तब यह जानकर बहुत सतोष मिला कि उसने अपने जीवन के चौबीस महत्वपूर्ण साल यू ही नही गवा दिए थे बल्कि उनका ठीक ही इस्तेमाल किया था। उसमे कुछ गलतिया अवश्य ही थी, किंतु व ऐसी थी जिनका सम्बन्ध सीधे समझदारी की कमी और यौवन की अनुभवहीनता से था। इस सबके बावजूद इस विचार से उसे बहुत सुकून मिलता था कि सोवियत सत्ता के लिए होने वाले सघर्ष के तूफानी दिना मे उसने भी पूरे उत्साह व ताकत स हिस्सा लिया था उसमे। और क्राति के लाल झड पर उसके अपने रक्त की भी कुछ बूदें जरूर थी। जब तक उसकी ताकता ने जवाब न दे दिया, वह बराबर लडने वालो की कतार मे रहता आया। और अबजख्मी हो जाने पर जबकि गोली चलाने वाला की पक्ति मे खड रहना उसके लिए सभव न था वह अस्पताल मे दिन गुजारन के सिवा कर भी क्या सकता था।

अब इस स्थिति म उसे क्या करना चाहिए जबकि पराजय उस पर हावी हो चुकी है और लडने वालो के बीच वापस पहुचने की कोई आशा न थी? क्या भविष्य मे उसे और भी भयकर यातनाए झलनी पडेंगी? फिर क्या किया जाय अब? यह सवाल गहरी चौडी खाई के समान उसके सामने मुह फाडकर खडा था और उसके पास फिलहाल इसका कोई जवाब न था।

लडने की क्षमता उसमे शेष न रही थी जो उसकी नजर म सबस

अनमोल चीज थी। अब वह किसके लिए जीये ? क्यो जीये ? अब जीना बेकार है और जीवन का अंत कर देना चाहिए। इस प्रकार के विचार पावेल पर हावी होने लगे और उसने आत्महत्या का इरादा कर जेब से पिस्तौल निकाल लिया। किंतु फिर यह सोचकर कि यह बहादुरी का नही, बुजदिली का काम है और इसे मूर्ख आदमी ही कर सकता है, उसने यह इरादा रद्द कर दिया।

जीने की कला सीखने और जीवन को उपयोगी बनाने के ख्याल से वह उठ खडा हुआ सडक पर चलने लगा। अब वह एक नये उत्साह का अपने भीतर अनुभव कर रहा था।

शहर सोवियत मे अपनी मेज पर पावेल का पत्र देख आर्तेम का मन खुशी से भर उठा। पावेल बहुत कम पत्र लिखा करता था। लिफाफा खोलकर उसने जल्दी जल्दी पत्र पढा।

'आर्तेम, आज मैं वह सब तुम्हे बताने के लिए लिख रहा हू जो पिछले दिनो से मुझ पर बीत रहा है।

सेहत के मोर्चे पर मैं हारता जा रहा हू और एक के बाद दूसरी चोट पड रही है। एक चोट से बडी मुश्किल से अपने पाव पर खडा हो पाता हू कि दूसरी चोट, पहली से भी क्रूर कठोर आकर मुझे गिरा देती है। और सबसे ज्यादा खतरनाक बात तो यह है कि अब इसका सामना करने की मेरी शक्ति चुक गई है। पहले मेरी बाइ बाह को लकवे ने अपना शिकार बनाया। और अब जैसे उससे भी उसका मन नही भरा तो मेरी टागो पर हमला कर दिया। चल फिर सकना तो पहले ही मेरे लिए कठिन था (अर्थात कमरे के भीतर ही) लेकिन अब तो बिस्तर से मेज तक घिसट कर पहुचना मेरे लिए कठिन हो गया है। न जाने अभी क्या-क्या देखना बाकी है।

मैं घर से बाहर नही निकलता और मेरी खिडकी से समुद्र का एक छोटा सा हिस्सा दिखाई देता है। इससे अधिक दुखदायी बात क्या हो सकती है कि एक आदमी मे दो परस्पर विरोधी चीजो का मेल हो जाय– एक धोखेबाज शरीर जिस पर उसका वश न हो, और एक बोल्शेविक का दिल उस बोल्शेविक का जो काम के लिए तरस रहा हो लडने वालो की

पक्ति मे, तुम्हारी बाजू मे, आकर खडा होना चाहता है ।

"मुझे अब भी यकीन है कि मैं लडने वालो की लाइन मे पहुच सकूगा और हमला करने वाली टुकडिया मे मेरी सगीन की भी जगह होगी। मुझे यह यकीन रखना ही होगा। इसे मैं छोड दू, इसका मुझे अधिकार नहीं है। दस साल तक पार्टी और कोमसोमोल से मैंने लडना सीखा है और हमारे नेता के वे शब्द, जो सबको सबोधित कर कहे गये थे, मुझ पर उसी तरह लागू होते हैं 'ऐसे कोई किले नही हैं जिन्हे बोल्शेविक जीत नही सकते।'

"मैं आजकल प्राय पढता ही रहता हू। किताबें, किताबें और किताबें! मैंने बहुत कुछ पढ लिया है, आखिर मैंने मार्क्सवाद लेनिनवाद की सभी बुनियादी किताबें अच्छी तरह पढ ली हैं और कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी की पत्रो-द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के पहले साल का इम्तहान पास कर लिया है। शाम को मैं कम्युनिस्ट नौजवानो का स्टडी-सर्कल लेता हू। ये नौजवान साथी पार्टी की व्यावहारिक जिन्दगी के साथ मेरे सबध की कडी हैं। और मेरी बीवी ताया है जिसकी राजनीतिक समझ और सामान्य ज्ञान बढाने की मैं पूरी कोशिश कर रहा हू। फिर प्यार तो है ही और मेरी छोटी-सी बीवी की मुहब्बत की बातें! प्यार लो।

तुम्हारा —पावेल

अब पावेल मत्सेस्ता सेनेटोरियम का ईंट से बनी तीन मजिली इमारत मे, जो पहाड के कगार पर बनी हुई थी, अपना इलाज करवा रहा था। डाक्टरो की राय उसके बारे मे अच्छी न थी। डाक्टरो का कहना था कि उसकी रीढ की हड्डी मे तकलीफ है, जिसकी वजह से उसके सारे शरीर म लकवा मारे जाने का खतरा है। यह बात डाक्टरो ने उससे छिपा रखी थी। किन्तु उसके मित्रो—पाकोव, चेर्नोकोजोव और शुरा जिगारवा जो वही अपना उपचार करवा रहे थे और मजे हुए पार्टी कार्यकर्ता रहे थे, को यह सुनकर बहुत दुख हुआ।

पावल की जीवन नाव अब भी पहले की तरह ही चलती जा रही थी कि अचानक उस पर मुसीबत ने फिर हमला किया। लकवे ने उसकी दोनो टागो को बेकार कर दिया। अब केवल दाहिना हाथ ही रह गया था

जिस वह अपना वह सकता था। अपनी इस असहाय स्थिति पर वह छट-पटा कर रह गया। विवशता के हाथों वह बबस हो गया।

आर्तेम को जब अपने भाई के आखिरी दुर्भाग्य की खबर मिली तो उसने मा को पत्र लिखा। पावेल की मा मारिया याकोवलेवना सब-कुछ छोडछाड कर तुरन्त अपने बेटे के पास पहुच गई। अब पावल मा और पत्नी ताया के साथ रहने लगा। ताया सेनटोरियम के रसोई घर मे बतन साफ करती थी। वह शहर सोवियत की सदस्या थी और पार्टी मेम्बर बनने के लिए दरखास्त दन की तैयारी कर रही थी।

यह सब चल ही रहा था पावेल, पर बीमारी की एक और निमम, कठोर और भयकर चोट हुई। उसकी दाहिनी आख मे तीखी जलन व भयकर दद हुआ जो तेजी से बाइ आख म भी पहुच गया। तब एकाएक उसकी आखो के सामन हमेशा के लिए काला पर्दा गिर गया। अधा होना कितना भयानक है, यह पावेल ने तब जाना।

उसने अपन मित्रो को चिट्ठिया लिखी। उन्हाने उस उत्तर देते हुए लिखा कि साहस स काम लो, अपन जीवन सघष को पूरी ताक्त स जारी रखो।

इन्ही कठिन सघर्षो के दिनो मे पावल की बीवी ताया पार्टी मेम्बर बन गई। उसने जब यह खुशखबरी पावेल को सुनाई तो उस बहुत खुशी हुई। उस व दिन याद आ गय जब वह पार्टी मेम्बर हुआ था।

पावल को मास्को आय डढ साल हो चुका था। इन अठारह महीनो मे उसने बहुत शारीरिक व मानसिक पीडा सही थी।

प्रोफेसर आवरबाक ने जो औखक्लिनिक म काम करते थे उसे बिलकुल साफ-साफ कह दिया था कि उसकी बाई आख की रोशनी लौटने की कोई उम्मीद नही है। भविष्य म सूजन उतर जान के बाद आपरेशन की सभावना थी। तब तक सूजन रोकने क लिए उसने आपरेशन की सलाह दी।

पावेल ने आपरेशन की इजाजत दे दी।

आपरेशन होता रहा। डाक्टर के हाथ म पकडा चाकू उसके थाइ रायड ग्लड को निकालने के लिए उसके गल म घूमता रहा। किन्तु वह

कस कर जीवन-डोर को पकड रहा। कई घण्टो की अनिश्चयपूर्ण प्रतीक्षा की पीडा के बाद उसन जीवन की बाजी जीत ली।

मौत के साथ इस तरह का उसका यातनापूर्ण सघर्ष तीन बार चला और तीनो बार अतत वह जीत गया। हर आपरेशन के बाद उसके चेहरे पर मौत का पीलापन होता लेकिन वह सदा की तरह सजीव, शात और विनम्र दिखाई देता।

पावेल का दृढ सकल्प था वह नवजीवन के निर्माताओ की पक्ति मे अपना स्थान लेकर ही रहगा। अब वह समझ चुका था कि उसे क्या करना चाहिए।

डाक्टर बाजानोवा किसी काम से मास्को आई तो वह पावेल स मिलन गई। पावेल ने पूरे उत्साह से उस अपनी वे योजनायें बतानी शुरू की जो शीघ्र ही उस नवजीवन के निर्माताओ की पक्ति मे खडा कर देगी।

पावेल की कनपटी पर चादी के तारो को दखकर बाजानोवा धीमे स्वर मे बाली स्पष्ट है कि तुम्हे बहुत कष्टो के बीच स गुजरना पड है, लेकिन तुम्हारा उत्साह जरा भी कम नही हुआ। मुझे खुशी ह कि तुमन उस काम को शुरू करन का फैसला किया है जिसके लिए पिछले पाच *सालो म अपने आप को तैयार करते आ रहे थे। लकिन कराग कैसे ?*

पावेल के चेहरे पर आत्मविश्वासपूर्ण मुस्कान आ गई।

उसन बाजानोवा को बताया कि कल उसके मित्र दपती का एक स्टेंसिल लाकर देंगे जिसकी सहायता मे वह पक्तियो को बिना एक-दूसरी म उलझाए ठीक ठीक लिख सकेगा। इस उपाय के बिना वह लिख नही सकता। बहुत सोचने समझने के बाद यह तरकीब उस सूझी थी। हाला कि बिना देखे लिखना वह भी तब जबकि पढ न सको बहुत कठिन काम है। लकिन असभव नही। उसने उस करके देखा था और जान गया था कि यह किया जा सकता है। हालाकि यह तरीका सीखन म उसे बहुत समय लगा तो भी धीरे धीरे एक एक अक्षर लिखते लिखते वह ठीक ठीक लिखना सीख गया था।

और इस प्रकार पावेल ने लिखन का काम शुरू किया।

उसन वीर कोतोव्स्की डिविजन के बारे मे एक उपन्यास लिखने की

बात सोची थी जिसका शीर्षक उसे अपने आप सूझ गया—'तूफान के बेटे'।

अब वह दिन रात लिखने में व्यस्त हो गया। उसकी सारी जिन्दगी 'तूफान के बेटे' लिखने में लग गई। धीरे धीरे एक एक अक्षर मिलकर एक एक पंक्ति बनने लगी और एक एक पंक्ति मिलकर एक एक पन्ना बन निकलने लगा। अपने काम में वह इतना लीन हो गया कि फर्श पर गिरे पन्नों को इकट्ठा करते समय उसकी मां उसे कहती 'मैं चाहती हूं पावलूशा, कि तुम कोई और काम करो। इस प्रकार जो हर समय तुम लिखने में लगे रहते हो वह तुम्हारे लिए ठीक नहीं।'

उपन्यास के तीन अध्याय लिखकर उसने कोतोव्स्की डिविजन के अपने पुराने सैनिक दोस्तों के पास उनकी राय जानने के लिए पाण्डुलिपि भेजी। उसके काम की उसके साथियों ने बहुत प्रशंसा की। किन्तु दुर्भाग्यवश डाक से लौटते समय पाण्डुलिपि खो गयी। यह बहुत बड़ा आघात था पावेल के लिए। उसकी छः महीनों की कड़ी मेहनत पर पानी फिर गया। अब किताब फिर से लिखने के सिवा कोई रास्ता न था।

और पावेल फिर से हिम्मत जुटाकर अपने काम में लग गया।

आखिर अन्तिम अध्याय भी पूरा हुआ 'तूफान के बेटे' का।

पाण्डुलिपि प्रादेशिक कमेटी के लेनिनग्राद स्थित सांस्कृतिक विभाग के पास भेज दी गई। अगर किताब स्वीकृत हुई तो प्रकाशक को दे दी जायेगी और फिर । इस विचार से पावेल के दिल की धड़कनें बढ़ जाती।

'तूफान के बेटे' की किस्मत का फैसला वास्तव में पावेल की किस्मत का फैसला होगा ऐसा वह मान चुका था। उसे महसूस हो रहा था कि किताब की नामंजूरी की स्थिति में उसका जिन्दा रहना मुश्किल होगा। वर्षों की हाड़ तोड़ मेहनत के बाद यदि पुस्तक अस्वीकृत हुई तो वह इस आघात को नहीं सह सकेगा। वह स्थिति उसकी सहनशक्ति के बाहर होगी। और तब फिर उसके पास जीने का कोई औचित्य ही नहीं बचेगा।

सुबह से शाम तक वह डाक की राह देखता रहता।

अन्ततः एक लम्बे अर्से के बाद प्रतीक्षा की घड़ियां खत्म हुई। एक

रोज उसकी मा दौडती और चिल्लाती हुई उसके कमरे मे घुसी। उसके हाथो मे प्रादेशिक कमेटी की ओर से आया टेलिग्राम था। उसमे लिखा था "उपन्यास बहुत पसद किया गया। प्रकाशक को दे दिया गया। बधाई।"

पावल का दिल जोर जोर स धडक रहा था। उसका वर्षों का सपना पूरा होने जा रहा था। उदासी, निराशा व जीवन के सघर्षों से कट जाने के भय का फौलादी शिकजा टूट गया था और वह एक बार फिर से जीवन-सग्राम के मैदान म लडने वालो के बीच वापस पहुच गया था।